वर्ष 27 अंक 5 मई - 2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी।

शबरी

SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम से 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका



कुरुम्ब नायनार अमर, शिव के भक्त महान ।
सुंदर मूर्ति से प्यार, दिखा दिया शिव चरण ।।

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi In Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்



- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

पढ़ो मन भरके

शबरी शिक्षा समाचार

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्

आजीवन सदस्य
₹ 1000/-
(20 वर्ष)

वर्ष 27, अंक 05 | मूल्य ₹ 3/- | मई - 2025

प्रधान संपादक
एम. वेंकटेश्वरन
संयुक्त संपादक
आर. जयकरन
सहायक संपादक
आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय
Shabari Siksha Samachar
R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक
Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES
Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414



VANI VIKAS NUMBER
0427-4265414
0427-4552100
Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
मानो सच जानो 7
रोको मत रुलाओ 8
भविष्य का संकल्प..... 10
अष्टछाप के प्रमुख कवि–सूरदास . 12
हिन्दी ग़ज़ल 13
दुखों से कैसे छुटकारा पाएँ..... 14
विरासत के साए 15
आधुनिक संध्या..... 16
बन जाते..... 17
नवरात्रि में कन्या पूजन 18
बाल रूप राम/दुर्मिल सवैया छंद . 19
अद्वैत दर्शन की गाथा 20
सच का बाजार 22
नई सोच है (छंद–मुक्त) 23
मृगतृष्णा 23
ललकार 24
वसुंधरा की पुकार..... 25
महान संत शिव भक्त–तमिल नायनमार 28
मातृ दिवस पर विशेष 30
माँ 30
जागो भारत जागो... 31
लक्ष्य पर तेरा निशाना हो 31
मेरे घर का आंगन 32
श्रीराम सा बनना होगा 33
वे दिन भी क्या दिन थे..... 33
संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास 34
आम की डाली 34
वो ख़त ! वो चिट्ठियाँ ! 35
चल मनवा उस पार 35
हमारी बिटिया हमारी शान 36
हिंसा छोड़ो 36
अनमोल पापा 37
रोटी 37
अभियान और हताशा 38
जब तक साँस है तब तक आस है 38
कर्तव्य बोध 39
एकता 39
ग़ज़ल 40
अजनबी 40
खेल भोले का 41
ग़ज़ल 41
जीवन एक पाठशाला है..... 42
पाठकों के पत्र 42
नवांकुर 43
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम् . 46
தமிழமுது 47
அருள் உலா 48

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜூலை-2025	20-07-2025	01-04-2025 to 31-05-2025	05-06-2025
அக்டோபர்-2025	26-10-2025	01-07-2025 to 31-08-2025	05-09-2025
ஜனவரி-2026	18-01-2026	01-10-2025 to 30-11-2025	05-12-2025
ஏப்ரல்-2026	19-04-2026	01-01-2026 to 28-02-2026	05-03-2026

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பம் மற்றும் தேர்வு கட்டணம் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (www.shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ D.D. மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.

Kindly pay exam fee only through
our web portal @ **https://shabari.in**

✍ संपादक की कलम से ...

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

आज भारत देश मात्रा नहीं पूरी दुनिया पाकिस्तान के करतूतों पर विमर्श कर रही है । पहलगाम में अपने जीवन के सुंदर पल अपनाने के लिए पर्यटक के रूप में आए हुए छब्बीस जनों को पाकिस्तान से भेजे गए आतंकवादियों ने बहुत ही क्रूर रूप से मार डाला है । इसमें किसी को किसी से कोई दुश्मनी बिलकुल नहीं रही । आम जनता पर आतंकवादियों की हमला हर हृदय को घाव पहुँचा चुका है ।

मारे गए व्यक्तियों से उनकी मातृभाषा पूछी नहीं गई, उनके कुल या जाति के बारे में कुछ पूछा नहीं गया । उनसे सिर्फ इतना पूछा गया था कि तुम्हारा क्या मजहब है ? मारे जानेवाले सब के सब मर्द थे । उनके गुप्तांगों का परीक्षण करके हिन्दू होने पर वे मार गिराए गए । मानवता पर दानवता का यह आक्रमण दुनिया की पूरी मानव जाति को चिंता ग्रस्त बना चुकी है ।

प्रकृति की मनोरम दृश्य को देख पाने और अपनी जिंदगी में एक बदलाव लाने के उद्देश्य से भारत वर्ष से दूर-दूर से, लोग कश्मीर के पहलगाम तक गए थे । अपने परिवार सहित प्यार से भरे उन फलों को दुख के सागर में डुबानेवाले उन अत्याचारियों का दर्ज असुर से भी बहुत ही निचला है ।

इन आतंकवादियों को सही सबक सिखाने के साथ-साथ इसका मूल कारण आतंकवादियों का अपना घर पाकिस्तान को उचित दंड देना भारतीयों का फर्ज है । समस्त जगत को अपना माननेवाला, वसुधैव कुटुंबकम के विचार रखनेवाले भारत पर आक्रमण कर उसकी शांति और समृद्धि को नष्ट करनेवाले पाकिस्तान को दुनिया के नक्शे से मिटा देना भी पाप नहीं है । एक बार उस पर सख्त कार्यवाही करना भारत सरकार का परम कर्तव्य है । हर भारतवासी की चाह भी यही है । हम किसी के दुश्मन नहीं है । दुश्मन हम पर अत्याचार करते रहे और हम अहिंसा का नाम लेते रहे यह भी बिलकुल संभव नहीं है ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!



अनमोल वचन

हाथ फैलाने से डरना

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – अपने पास जो कुछ भी है उसे छुपाये बिना समन दान करनेवाले सज्जन के सामने भी हाथ नहीं फैलाना कोटी मन श्रेष्ठतम है ।

भिक्षा लेकर जीने को मजबूर करके अगर मानव को बनानेवाला, कुछ लोगों को भीख माँगने के लिए बनाया होता तो वह इधर उधर भटककर नष्ट हो जावें ।

गरीबी से सताये जाने पर कुछ परिश्रम न कर भीख माँगकर जीवन चलाने का निश्चय करें तो उससे भी बडी क्रूरता और कुछ हो ही नहीं सकता ।

अपने पास कुछ नहीं होने पर भी, गरीबी से सताये जाने पर भी किसी के सामने हाथ न फैलाने का मन जिसके पास है, उसके सामने सारे जगत को रख देंगे तो भी समान नहीं हो सकता ।

खाने के लिए सिर्फ पुराना चावल है तो उसे कठिन परिश्रम करके कमाकर खाने का मजा किसी और चीज में नहीं रहता ।

गाय जो प्यासा है, उसके प्यास बुझाने के लिए अगर हम किसी के सामने हाथ फैलावें तो भी वह जीभ के लिए लज्जादायक है ।

अपने पास जो भी है उसे छुपाकर अपने सामने हाथ फैलानेवाले के सामने कोई हाथ न फैलावें, हाथ फैलाकर यह मेरी आपसे विनती है ।

गरीबी रूपी समुद्र को पार करने के लिए भिक्षा रूपी निर्बल नाव, अपने पास जो है उसे छुपानेवाले रूपी पत्थर में टक्कर लगाकर टूट जायेगा ।

हाथ फैलानेवालों की स्थिति पर विचार करने पर मन पिघल जाता है । हाथ फैलाने के बाद भी अपने पास जो वस्तु है उसे छुपाकर न कह देनेवाले के बारे में सोचते ही मन टूटकर मिट जाता है ।

हाथ फैलाने पर जब न कर देते हैं तब भीख माँगनेवाले की जान चली जाती है, अपने पास कुछ रखकर भी नकारनेवाले की जान क्यों नहीं जाती है ?

मानो सच जानो

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

जन्म तो ले लिया तूने बताओ पूछकर किससे तू आया ?
नाम तुझे जो मिला बताओ किससे पूछकर रखे थे ?
माता-पिता को चुनने का अधिकार तुझे ना रहा
देश या इलाका उसका भी तुझे क्या ज्ञान रहा ?
परिवार और बड़ोती तुझे जो मिला है कारण क्या है जाना ?
कुछ भी तेरे हाथ में नहीं रहा है क्या इसे पहचाना ?
माँ ने जो भी बताया था उसे तुमने भरपूर माना
परिवार की संपत्ति उसी से बड़ा पला कुछ बना ।

पाने की इच्छा तुझ में कितनी है कभी तो नापा करो
देने की आदत तुझ में है क्या ? उसे भी सोचा करो
कमाने की इच्छा सब में होता है होने दो कमा लो
साथ जो रहते हैं उसको भी बढ़ाने का तुम ठान लो
उन्नति या प्रगति सही अर्थ तक पहुँच नहीं पाती है
उन्नति की सीमा जब तेरे तक सिकुड़ती रह जाती है
साथ ले चलो सबको सिर्फ अपनी नहीं सबकी तुम सोचो
दुनिया तेरी अकेली नहीं है सब के सुख में सुख अपनाओ ।

आया है, यही तू रहनेवाला नहीं है चला जाएगा
अब यह सोचा करो जाने के पहले तुम क्या क्या कर पाओगे ?
मरना तो सुनिश्चित है, आज हो या कल परसों वह विदित है
मरते तक खुलकर जियो, अपने साथ दूसरों को भी ज़िताओ
सोच बदलो सुधर जाओगे, सबके लिए जिओगे
सबके लिए जब जीने लगोगे सही सुख पाओगे
दुनिया की जिंदगी खुद की नहीं है, किराया मकान है
खाली करना ही होगा, जब परमेश्वर की आज्ञा हो ।

रोको मत रुलाओ

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

ओ जानकी ओ मेरी जानकी आओ ना दो मिनट के लिए । हाथ में उस दिन का समाचार पत्र लिए हुए अपनी कुर्सी पर आराम से बैठे हुए जोर–जोर से चिल्ला रहे थे राम ।

आती हूँ आपको क्या है ? घर का कोई काम नहीं है आराम करना और मुझ पर राज चलाना यही आपको आता है । चूल्हे में क्या है ? मैं क्या कर रही हूँ ? क्या काम हो रहा है ? किसी भी चीज की कोई कदर नहीं है । बस बैठे बैठे चिल्लाओ ।

अरे बस बस बस । चूल्हे को गरम होने दो तुम क्यों गरम हो रही हो ? अरे एक बहुत ही महत्वपूर्ण समाचार तुझे बताना था इसीलिए तो बुलाया । ठीक है तुम अपना काम कर लो । पढ़ते हुए बता रहे थे राम ।

ऐसा कौन सा समाचार है जो जीवन की दशा दिशा बदल देनेवाला है ? काम में तल्लीन होकर पूछने लगी जानकी । छोड़ो, तुम कभी कुछ समझ नहीं पाओगी संभव है कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध शुरू हो जाए और दोनों तरफ नाश का तांडव हो ।

अपने हाथ में दो कप गरम चाय लेती हुई आकर पास बैठ गई जानकी । चाय का प्याला आगे बढ़ाते हुए कहने लगी – बंटवारे से आज तक पाकिस्तान भारत के लिए सिर दर्द बना रहा है । देश की उन्नति उनके लिए कभी कोई मान्य विषय नहीं रहा है । उनका एकमात्र लक्ष्य रहा है भारत में आतंकवादियों को भेज कर हल्ला मचाना । मानती हूँ कि सिर दर्द हो तो सिर को अलग नहीं कर सकते । लेकिन अगर बाल है बार–बार उस बाल से परेशान होते जा रहे हैं तो टकला हो जाने में ही भलाई है । बाल को निकाल दो तो नए बाल सही ढंग से आ जाएँगे ।

कहना तो बहुत आसान है जानकी भई ! लेकिन युद्ध के दुष्परिणाम पर ध्यान दो । दोनों तरफ लाखों करोड़ों में लोग मर भी सकते हैं । मकान गिराए जाएँगे उपजाऊ जमीन बंजर भी बन सकते हैं । दोनों देशों में कुछ स्वार्थी

व्यापारी एक रुपये के चीज को ₹100 में भी बेच सकते हैं । महँगाई बढ़ेगी और देश का हाल बिगड़ भी सकता है ।

निहत्यों पर हथियार चलाना अच्छा लगता है क्या ? मर्द के गुप्तांग को देखकर हिन्दू होने पर उनको मार डालना पच्चीस छब्बीस परिवारों का नींव उखाड़कर फेंकना उचित था क्या ? अरे भारतीय परंपरा पर ध्यान दो । हमारे पूर्वज न्याय के लिए जान देनेवाले थे । लेकिन अन्याय को कभी सह नहीं पाते थे । दंड जरूर दिया करते थे । अहिंसा और शांति के विचारवाले को ताकत और उन्नति की भी पक्षधर होना चाहिए । अगर झुकते रह जाएँगे तो उठने का मौका ही नहीं मिलेगा । अगर सीधी भाषा से समझ नहीं पाएँगे तो टेढ़ी भाषा अपनानी होगी । बड़बड़ाती रही जानकी ।

चाय का एक घूंट पीते हुए राम ने कहा – यह बच्चों का खेल नहीं है जानकी । तुम तो ऐसी बात कर रही हो कि इतने साल से जो बम और अन्य सामग्री बनाकर रखे हैं उनकी परीक्षा ली जाए । दोनों तरफ युद्ध के दुष्परिणाम जरूर दिखेंगे ।

जानकी को काम था । फिर भी कहने लगी – सिर्फ जानकी ही नहीं बल्कि जहरुन्निशा नरेंद्र अमित राहुल लल्लू जोसेप अन्नामलै सुरेशसंतोष सारे भारतवासी यही चाहेंगे । हर बार उनसे पीड़ा सहने के बदले एक बार ही सही उसमें घाटा हो तो भी सही अब रोको मत रुलाओ । आतंकवादियों का, उनके पक्षधर का नाश ही सबक सिखा सकता है । नरम दिल से कभी उनसे काम लिया जा नहीं सकता ।

चाय के प्याले लेकर जानकी तो रसोईघर के अंदर चली गई । राम के मन में यह बात आने लगी, रावण को एक बार नहीं बार–बार मौका दिया गया । जब सुधरा नहीं तब उसका एक नहीं दस आनन मार गिराए गए । जब साम दाम भेद से काम नहीं बनता तब दंड को ही अपनाना पड़ेगा । जानकी सही है । भारतवासी को ही नहीं किसी भी देशवासी को यही सही लगेगा ।

जल है तो जीवन है, जीवन अनमोल है।



बाल कहानी

भविष्य का संकल्प

– श्री. राजेन्द्र परदेसी,
लखनऊ, उ.प्र.

विद्यालय का वार्षिक परीक्षाफल घोषित हुआ । जो लड़के पास थे, वे खुश थे और जो असफल हो गये थे, उनके चेहरे पर उदासी स्पष्ट झलक रही थी । उन्हीं में से एक प्रशान्त भी था । वह तो पहले से ही जानता था कि इस वर्ष परीक्षा में सफलता नहीं पायेगा । पर जब तक परीक्षाफल नहीं निकला था, घर में सभी को भ्रमित किये था । आज जब सब कुछ स्पष्ट हो गया तो उसने घर लौटने के बजाय दूसरी ओर कदम बढा दिये । तभी उसके मित्र आनन्द की दृष्टि उस पर पड़ी । बिना कुछ बोले वह प्रशान्त के पीछे चल पड़ा । चौराहे पर पहुँच कर प्रशान्त कुछ पलों के लिए ठिठक गया । शायद वह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि अब किधर जाय, अचानक जब उसके कदम स्टेशन की ओर जानेवाली सड़क पर बढ़ने लगे तो आनन्द अपने आपको रोक नहीं सका, तेज कदमों से चलकर अपने और प्रशान्त के बीच की दूरी लगभग समाप्त करते हुए पास से बोला – प्रशान्त, इधर कहाँ जा रहे हो ?

अपना नाम सुनकर प्रशान्त पहले चौंका, मुड़ कर देखा तो पीछे आनन्द को पाया । वह कुछ क्षण सोच ही नहीं पाया कि उससे क्या कहे । कुछ देर बाद बोला – तुम मेरे पीछे क्यों आ रहे हो ?

आनन्द ने कहा – ''मैं तुम्हें सुबह से ही उदास देख रहा था, तभी अनुमान लगा लिया था कि आज परीक्षाफल निकलने के बाद कोई अनिष्ट न कर बैठो, इसलिए बिना तुमसे बताये तुम्हारे पीछे पीछे आ रहा था ।'' इसी के साथ उसने प्रशान्त से प्रश्न भी किया – लेकिन तुम इधर कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारा घर तो दूसरी ओर है ।''

'मैं घर नहीं जाऊँगा ।''

''तो फिर कहाँ जाओगे ?''

''मैं कोई गाड़ी पकड़ कर कहीं दूर चला जाऊँगा, जहाँ मुझे कोई कुछ कहनेवाला नहीं होगा ।'' सहमते हुए प्रशान्त ने कहा ।

आनन्द को अनुमान लगाते देर न लगी, कि प्रशान्त डांट खाने की डर से घर नहीं जाना चाहता । इसीलिए उसे वह समझाते हुए कहा – प्रशान्त, तुम घर नहीं जाओगे तो तुम्हारे माता पिता चिंतित होगे । एक तो तुम्हारी असफलता का समाचार सुनकर वे लोग दुःखी होंगे ही, दूसरे तुम घर से भाग कर कहीं चले जाओगे तो उनकी क्या हालत होगी, इसके बारे में भी सोचा है ।''

आनन्द की बातों को सुनकर प्रशान्त को कोई उत्तर न सूझा । सिर नीचे किये मौन खड़ा रहा । वह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि क्या करे ? आनन्द ने ही पुनः पहल की – ''मेरी मानो तो तुम घर लौट चलो । मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ । वहाँ चाचा चाची से कहूँगा – वे तुम्हें कुछ न कहे, तुम अपनी भूल स्वीकार चुके हो । इस वर्ष की असफ़लता पर विजय पाने के लिए अब कड़ी मेहनत और लगन से पढ़ोगे, तो अगले साल अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होगे ।''

आनन्द की बातों पर प्रशान्त ने कोई उत्साह नहीं दिखाया, तो उसे प्रोत्साहित करने के विचार से आनन्द ने कहा – ''मानता हूँ असफ़लता के कारण तुम्हारा मन दुखी है, लेकिन विचार करो, दोष किसका है । अगर मेहनत से साल भर पढ़ाई की होती तो क्या आज इस तरह तुम्हे घर से भागने की जरूरत होती । अब तो जो हुआ, उसे भूल जाओ, समस्या से मुख मोड़ना कायरता है । बहादुर व्यक्ति वहीं होता है, जो उससे लड़कर विजय प्राप्त करता है ।''

आनन्द की बातो ने प्रशान्त के हृदय पर छाये निराशा के बादल को हटा दिया, उसने अपना निर्णय बदल दिया घर से भागने की जगह घर की ओर चल पड़ा । अब उसके अन्दर निराशा नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प था, भविष्य में होनेवाली परीक्षा मे सफ़लता प्राप्त करने का ।

पानी बचाओ, जीवन बचाओ, कल को सुरक्षित बनाओ ।



अष्टछाप के प्रमुख कवि-सूरदास

(संदर्भ – सूरदास जयंती 2 मई 2025)

– श्री. तरुण कुमार दाधीच,
उदयपुर, राजस्थान

हिंदी साहित्य में भक्ति काल की सगुण भक्ति धारा के अंतर्गत अष्टछाप कवियों का अपना विशेष महत्व है । गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के समय में पुष्टि मार्गीय विधि के दो क्रम कर दिए गए । प्रातःकाल से शयन तक की सेवावधि और वर्षोत्सव की सेवा विधि । पुष्टि संप्रदाय में प्रचलित विश्वासानुसार जब श्री गोवर्धननाथ जी के मुखार्विंद का प्राकट्य हुआ तो आठ सखा भी सेवा के लिए प्रकट हुए । इसी से इन्हें ''अष्ट सखा'' भी कहा जाता है । अष्ट छाप में छाप शब्द गोस्वामी विट्ठलनाथजी के मौखिक आशीर्वाद की छाप का परिचायक है । हिन्दी साहित्य में अष्ट छाप की स्थापना काल वि.सं.1602 स्वीकार किया गया है । अष्टछाप का नाम तालिकावाला यह दोहा प्रसिद्ध है –

कृष्ण जु कुंभनदास है, सूरहि परमानंद ।
नंद चतुर्भुज जु, छीत स्वामि गोविंद ।।

वस्तुतः सौंदर्य और तज्जन्य प्रेम को परखने की जैसी अंतर्दृष्टि सूरदास जी को प्राप्त थी, वैसी हिन्दी के किसी अन्य कवि को प्राप्त नहीं हुई । उन्होंने मानव के सज्जित और स्वाभाविक बहिरंग रूप, चेष्टाओं और अनुभूतियों की निरीक्षण जैसी प्रतिभा प्राप्त थी वैसे ही सृष्टि में प्रसारित यावत् सौंदर्य को परखने की प्रतिभा प्राप्त थी । उनका कृतित्व एवं भक्ति दोनों उर्जस्वित थे । अपने संपूर्ण जीवन को पुष्टिमार्ग के लिए समर्पित कर देने पर भी उनके काव्य में कहीं सांप्रदायिकता की गंध नहीं आती । उन्होंने विरोधी मतवाद का खंडन भी किया है तो भी कटुता नहीं आ पाई है । अहमन्यता से वे कोसों दूर थे । जीवन के आरंभिक दिनों में महात्म्य भाव के कारण वे इधर उधर भटकते रहे । आम ख्याति से परे रहनेवाला अष्टछाप में सूरदास जी के समान दूसरा कवि नहीं । भगवान श्रीकृष्ण के प्रति उनकी परम प्रेम रूप भक्ति ने ही उन्हें प्रतिकूल

विषयों से दूर कर दिया था । बादशाह अकबर के लाख प्रयास करने पर भी सूरदास जी ने उनकी प्रशंसा में पद नहीं लिखे । उपास्य के रहते दूसरे आश्रय की आवश्यकता ही क्या है ? यह उनके साहस और दृढ़ता का परिचायक है ।

सौंदर्य और प्रेम को परखने की सूरदास जी में अद्‌भुत प्रतिभा थी । उन्होंने रति के संदर्भ को विस्तार दिया है । केवल प्रिया-प्रियतम तक परिमित न रहकर माता-पिता, सखा-सखी, भक्त-भगवान तक उनके क्षेत्र का विस्तार हो गया है । इसी प्रकार जगत में उन्होंने जहाँ कहीं सौंदर्य देखा, अंकन कर लिया है । मानव सौंदर्य और उसमें भी नारी और वह भी नव वय उनके लिए विशेष आकर्षण है । श्रीकृष्ण तो अंग प्रत्यंग सुंदर हैं ही, उनके सान्निध्य के कारण सखा, पथ, गो, गोप सभी सुंदर हैं । प्रकृति का सौंदर्य उन्होंने मानव से अलग कर के नहीं देखा है । वह आलंबन नहीं उद्दीपन तथा उपमान है ।

सूर के समान प्रेम का चित्रकार कोई अन्य कवि नहीं हुआ । उनके व्यक्तित्व की सबलता तो इसी से स्पष्ट है कि प्रिया-प्रियतम तक ही रति भाव को परिमित न रखकर उन्होंने माता-पुत्र, पिता-पुत्र, सखा-सखी तक के संबंधों के सूक्ष्मतम स्पंदनों को पहचानने की क्षमता थी । उनका हृदय विशाल था । उनके ग्रंथ का सामान्य अध्येता यही समझ सकता है कि वे वैष्णव और उसमें भी सगुणोपासक हैं । पुष्टि संप्रदाय में आने के पश्चात सखा भाव की उपासना स्वीकार करते हुए भी दास्य-भाव से विरत नहीं हो पाए थे । इस प्रकार स्पष्ट है कि सूरदासजी अष्टछाप के कवियों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं ।



हिन्दी ग़ज़ल

– डॉ. अविनाश ब्यौहार,
जबलपुर, म.प्र.

तुम भी गाल बजाना सीखो ।
और हरकतें नाना सीखो ।।
आस-पास की बात नहीं है
दुनिया में छा जाना सीखो ।
आत्ममुग्ध होने से अच्छा
तुम भी देना ताना सीखो ।
आतंकी का धर्म नहीं है
थोड़ा तो भय खाना सीखो ।
दंगे-वंगे होते रहते
भइया आग लगाना सीखो ।



दुखों से कैसे छुटकारा पाएँ

– श्री. रीता सिंह,
बेंगलुरु, कर्नाटक

आज हर इनसान दुखी है । कोई धन के लिए परेशान है तो कोई बीमारियों से परेशान है । कोई अपने रिश्तों में दुखी है । इन दुखों का क्या कारण है ? आज का मनुष्य धन कमाने की होड़ में लगा है । जो उसके पास है उसमें संतुष्ट नहीं है । मनुष्य को और अधिक चाहिए । और इस अधिक को पाने के प्रयास में वो अपना सुख–चैन सब खोता जा रहा है । जो उसके पास है उसका भी लाभ नहीं ले पा रहा । आज पति–पत्नी दोनों मिल कर घर चलाते हैं उसके बाबजूद भी दोनों सुखी नहीं हैं । पति–पत्नी के बीच दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं । माँ–बाप से बच्चे दूर होते जा रहे हैं । सब अपने स्वार्थ के लिए एक दूसरे से जुड़े हैं ।

जो लोग पूजा करते हैं, धर्म कर्म में आस्था रखते हैं वो लोग भी अक्सर जरा–सी तकलीफ आने पर ईश्वर पर ही दोष लगाने लगते हैं । उनका कहना होता है कि इतनी पूजा पाठ करने के बाद भी हमको दुख मिल रहा है तो पूजा करने से क्या लाभ ? उनको ये समझ में नहीं आता कि पूजा करने से आपके दुख कम होकर मिले हैं । किसको पता कि कितना बड़ा दुख लिखा था । जो पूर्व जन्म के कर्म हैं उनको भुगतना ही पड़ता है । हाँ, पूजा करने से बड़ा दुख थोड़ा कम होकर मिलता है । जैसे किसी के भाग्य में दुर्घटना होकर कोई बड़ा नुकसान लिखा है लेकिन पूजा करने के बाद वह थोड़ा कम हो जाता है । जैसे दुर्घटना तो हुई पर जितनी चोट शरीर पर लगनी थी उतनी नहीं लगी । भाग्य का लिखा भी झूठ नहीं हुआ और तकलीफ भी कम हो गई । हम तो इनसान हैं । क्या भगवान श्री राम या भगवान श्री कृष्ण को कष्ट नहीं उठाना पड़ा था ? भगवान श्री राम के राज तिलक की तैयारी हो रही थी और उनको वन जाना पड़ा । राजमहल का सुख छोड़ कंद फल खाना पड़ा । उनके अवतरण से पहले ही ऐसा होना निश्चित था । लंका विजय के बाद भी उनको कहाँ सुख मिला । माता सीता को गर्भावस्था में वन भेजना पड़ा ।

भगवान श्री कृष्ण के जन्म से पहले ही उनके माता-पिता को कारागार में रहना पड़ा । जन्म होते ही अपने माता पिता से दूर गोकुल जाना पड़ा । यदि हम अपने धार्मिक ग्रंथो का अध्ययन करें तो हमें ज्ञात होगा कि इस पृथ्वी पर जन्म लेने के बाद भगवान को भी कष्ट उठाने ही पड़े थे । जब-जब धरती पर पाप बड़ा, ईश्वर ने अवतार लिया । लेकिन मनुष्य रूप में आने के बाद उन्होंने भी दुख उठाये ।

हम तो मनुष्य हैं और ईश्वर की तरह पवित्र भी नहीं हैं । जाने-अनजाने न जाने कितने पाप हमसे होते रहते हैं । फिर हम दुखों से कैसे बच सकते हैं । दुखों को कम करने के लिए केवल ईश्वर का नाम जप ही सहायक है । अपनी असीमित इच्छाओं पर अंकुश लगाएँ और एक दूसरे के दर्द में सहायक बनें । जो नहीं है उसको पाने के प्रयास में जो है, उसको न खोयें । तभी हमारा जीवन सुखी हो सकता है ।



विरासत के साए

– श्री. सुव्रत दे,
सम्बलपुर, उड़ीसा

भूले-बिसरे कुछ चित्र,
धुंधली सी मुस्कान लिए,
दीवारों की दरारों में अटके,
अब भी धीरे धीरे साँस लेते हैं ।

वक्त की किताब में दबे पत्ते,
सूखे नहीं-बस मौन हैं,
क्योंकि जड़ों से टूटी शाखाएँ भी
हवा में अपनी कहानी लिखती हैं ।

टूटना, बिखरना, गल जाना,
क्या सच में किसी का अंत होता है ?
पत्तियाँ गिरकर भी जड़ों को सींचती हैं,
छाँह बनकर लौट आती हैं ।

साथ बीते दिनों की अनमोल छुअन
अब भी हथेलियों पर बाकी है,
वो स्वर, वो हँसी, वो कोमल स्पर्श,
जो कभी वर्तमान था, अब स्मृति मात्र है ।

अलग होना तब अधिक चुभता है
जब दूरी नहीं, पर अनकहे संवाद होते हैं,
जब पास होकर भी अंतराल रह जाते हैं,
और आँखें स्वप्न बुनने से डरने लगती हैं ।

पर क्या विरासत कभी पराई होती है ?
क्या अपने सच में छूट जाते हैं ?
शाखाएँ झुककर मिट्टी चूमती हैं,
और जड़ें फिर से नवांकुर रचती हैं ।



आधुनिक संध्या

– श्री. कशिश कुमावत,
सीकर, राजस्थान

प्रकृति का सौंदर्य अद्‌भुत और अतुलनीय है । प्रकृति का प्रत्येक दृश्य अपने सौंदर्य की छटा बिखेरे रहता है । इसी सौंदर्य को चार चाँद लगाती है – संध्या । जो प्रकृति के सौंदर्य को तो बढ़ाती ही है लेकिन उसके साथ–साथ वह अपने घरौंदों से दूर निकले मजदूरों और थके हारे लोगों को उनके घर तक लाती है और उनके मन में व्याप्त निराशा को आगे आने वाले सुखद व आनंदमय जीवन की आशा से प्रेरित करती है । लेकिन जब से ये आधुनिकता का दौर आया है तब से संध्या में कुछ बदलाव सा नजर आने लगा है । आधुनिकता से पहले की संध्या कुछ और थी और इसके बाद की संध्या कुछ और है । परिवर्तन तो हुआ है, लेकिन संध्या में भी उसके भौतिक परिदृश्य में भी । क्योंकि जब से प्रकृति का सृजन हुआ है तब से संध्या उसी प्रकार आती है जैसे पहले आ रही थी । लेकिन बदलाव उसके भौतिक वातावरण में हुआ है ।

इस दौर से पहले संध्या गोधूलि बेला के पीछे–पीछे आती और एक शीतल व मधुर वातावरण के साथ चारों ओर अपनी रस भरी महक को फैला देती । सूर्य भी अपने घर लौट जाता और जाते–जाते आसमान में हल्के–हल्के बादलों को चीरती हुई सूर्य की किरणें उन्हें इस प्रकार भिगो देती, मानो जैसे आसमान में केसर का बाग लगा हो । प्राचीन काल की संध्या का दृश्य इतना मनोहर और सुखप्रद था कि उसके जैसा वातावरण बन पाना इस समय नामुमकिन सा लगता है । उस समय गोधूलि बेला का समय मन को प्रफुल्लित और आनंदित कर देनेवाला था । जब श्रीकृष्ण अपने नन्हें–नन्हें हाथों से गायों को चरा कर लाते थे तो गायों के पैरों से उड़नेवाली धूल में इतनी महक थी कि वो सारे वातावरण को महका देती थी । मंदिर के शिखर

के कलश पर पड़नेवाली सूर्य-किरणें उसे स्वर्ण कलश के समान दिखलाती है । लेकिन आज की आधुनिक संध्या भी इस दौर के साथ बदल गई ।

अब की शाम गोधूलि बेला के साथ नहीं बल्कि मोटर वाहनों के साथ आती है तथा कुछ मैलापन अपने साथ लाती हुई अंधेरे में गुम हो जाती है । गोधूलि बेला के समय धूल मिट्टी तो नहीं उड़ती पर मोटर वाहनों से काली धुआँ जरूर निकलती है जो लोगों के भीतर जम गई है और लोगों में अपराधिक प्रवृति को जन्म देती है । संध्या भी अंधेरी रात के तले कुचल जाती है और इसी अंधेरी रात्रि में असामाजिक कार्यों का मेला लगता है । तारे भी उस संध्या की मायूसी पर शौक प्रकट करते हुए धीरे धीरे टिमटिमाते हैं तो ऐसा लगता है जैसे वे संध्या की पीड़ा को कम करने का प्रयास कर रहे है । बदलते दौर के साथ प्रकृति में भी बदलाव आया है और बदलाव मनुष्य ने अपने स्वार्थ के कारण किया है क्योंकि उनकी यह धारणा है कि स्वार्थ ही विकास है । यह स्वार्थ हमारे परिवेश में ऐसा बदलाव लाया है कि गाँव में सभी का शाम के समय गली-नुक्कड़ में भी बैठकर अपने अच्छे-बुरे के किस्से सुनना और सुनाना, मंदिरों में होनेवाली संध्या आरती का शोरगुल अब इतना उत्तेजित व मदमस्त नहीं कर पाता जितना उसे करना चाहिए । अब लोगों के पास समय कम और काम ज्यादा होने से प्रकृति के सौंदर्य को कुछ क्षण निहारने और उससे अपने तनाव की दूर करने का वक्त ही नहीं है । वह समाज से दूर रहकर अपनी जिंदगी की दौड़ में अव्वल आना चाहता है । इसलिए वह पूरे दिन कार्यस्थल से घर तक का सफर रखता है और अगले दिन की शुरुआत भी इसी तरह करता है । इसीलिए प्रकृति ने भी अपना रुख बदल लिया उसमें भी मायूसी रहने लगी... ।

बन जाते

- श्री. आर.के. रस्तोगी,
गुरग्राम, हरियाणा



कोशिश अगर सच्ची हो तो रास्ते भी मिल जाते हैं,
विश्वास अगर प्रभु पर है तो हालात बदल जाते हैं ।
हौसला अगर दिल मे हो तो तूफान भी रुक जाते हैं,
मेहनत जारी रहे तो स्वप्न भी हकीकत बन जाते हैं ।।



नवरात्रि में कन्या पूजन

– श्री. देवेन्द्र कुमार मिश्रा,
जबलपुर, म.प्र.

मैं छोटा था । नवरात्रि पर कन्या पूजन के लिए मेरी बहिन को आसपड़ोस के घरों में बुलाया जाता । मैंने माँ से कहा, लड़कियों को ही क्यों, हमें क्यों नहीं बुलाया जाता । मेरा मतलब लड़कों से था । माँ ने कहा, कन्या को देवी का रूप माना जाता है । यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है । लड़कियों के दायित्व बड़े होते हैं । वे भोजन पकाकर खिलाती हैं । इसलिए अन्नपूर्णा का रूप हैं । जैसे माँ संतान को जन्म देकर दुनिया को आबाद रखती हैं । ये कन्याएँ बड़ी होकर किसी का घर बसाकार लक्ष्मी रूप में जाएगी । माँ से, स्त्री से बड़ा कोई नहीं होता । कन्या उसी जननी दुर्गा का अंश मानी जाती हैं । नवरात्रि में कन्या पूजन का महत्व है क्योंकि कन्या को बड़े होने पर भी वही सम्मान मिले । स्त्री सम्मान के संस्कारों के लिए कन्या का पूजन किया जाता है । ताकि सब को याद रहे कि यह वही स्त्री है जिसका बचपन में पूजन किया जाता था । अन्यथा जिस संस्कृति में स्त्री का सम्मान नहीं होता वह नष्ट हो जाती है । अतः कोई स्त्री का अपमान न करे । रावण ने किया था । दुर्योधन ने किया था । उनका वंश सहित विनाश हुआ था । बोलो, तुम अपनी माँ का सम्मान करते हो ।''

मैंने उत्तर दिया, हाँ माँ, बिलकुल देता हूँ । आप मेरी माँ हैं । ''माँ ने फिर पूछा, अपनी बहिन का सम्मान करते हो ''मैंने कहा, ये भी कोई पूछनेवाली बात हैं । माँ ने कहा, और पराई लड़की का । मैं सोचने लगा कि क्या उत्तर देना है । माँ ने कहा, क्यों वो भी तो किसी की बेटी है । किसी की बहिन है । किसी की माँ है । उसे भी वही सम्मान देना । यही हमारी संस्कृति है । और शादी के बाद अपनी पत्नी को भी प्रेम के साथ सम्मान । इसलिए कन्या पूजन करते हैं ताकि लड़कों को याद रहे कि स्त्री का सम्मान करना चाहिए । थोड़ी देर में बहिन सजी हुई देवी बनकर वापिस आई । उसने कहा, माँ मुझे दक्षिणा में एक सौ एक रुपये मिले हैं । माँ ने पूछा, क्या करेगी, पैसों का । छोटी बहिन ने कहा, भैया और मैं शाम को चॉकलेट खाएँगे । मेरी आँखों में आँसू आ गए । मैंने खुद को सँभालते हुए कहा, पैसे तुम्हें मिले, तुम्हारे हैं । मुझे चॉकलेट क्यों ? बहिन ने हँसते हुए कहा, अरे बुद्धू भाई बहिन का तेरा–मेरा नहीं होता । जो बहिन का वो भाई का । मिलकर खाएँगे । इसे देवी का आशीर्वाद समझ । बहिन के इस वाक्य पर हँसी के साथ अब कि सच में आँसू निकल गए ।



बाल रूप राम / दुर्मिल सवैया छंद

– श्री. विमल कुमार,
पूर्णियाँ, बिहार

रात में अवतार लिए हरि जो, वरदान चुका नर राम हुए ।
हरषे नगरी रानियाँ सब हीं, मुनि देव सभी स्तुति गान किए ।।
अखियाँ झलके अवधेश खुशी, गाना सुत चार किलोल किए ।
अति सुंदर श्यामल गौर दिखे, लगते सुर बालक रूप लिए ।। 1 ।।

मुख राम निहार पतंग रुके, सजनी रजनी अखियाँ पसरे ।
मलयानिल गंध बिखेर चले, गगनांगन पुष्प बिछात फिरे ।।
चिड़िया चहके कलियाँ चटके, भँवरे मद गुंजन तान भरे ।
धरणी धरती चुनरी सजती, जय राम सभी जय गान करें ।। 2 ।।

द्वय लोचन अंजन कंज लगे, मुख पे घन कुंचन मंजुल – से ।
लगते बदरा बिजुरी चमके, कन कंचन कुंडल डोलत – से ।।
घुसके लुढ़के तन धूरि भरे, बिहँसे नृप गोद लिए हुलसे ।
अति सुस्मित रूपक रूप सखे, उपमेय नहीं उपमा किससे ।। 3 ।।

मणि मंजुल माल गले लिपटे, कर कुंदन कंगन मोहनिया ।
कमनी कटिबंध गिरे बजते, चलते झनके पग पैजनिया ।।
कछनी पट पीत दुकूल सजे, सरयू तट खेलत दौड़निया ।
कर में धनुहीं सर सोहत ज्यौं, रण में रणवीर विलोकनिया ।। 4 ।।

जिनके मुँह राम कभी निकसे, प्रभु पार करें भव से सुनिए ।
सब संकट दूर करें प्रभु ही, अब संकट जीवन का हरिए ।।
रघुनंदन चंदन कुंद लगे, जय राम राम रमते रहिए ।
पद पंकज में नयना रखिए, मन गीत अलाप भरे चलिए ।। 5 ।।

बिन जल जीवन नहीं, समझो इसका सही अर्थ ।



अद्वैत दर्शन की गाथा

– श्री. अवनीश कुमार गुप्ता 'निर्द्वंद',
प्रयागराज, उ.प्र.

ब्रह्म से हम, ब्रह्म में समाहित,
यही सत्य है, जीवन का उद्देश्य ।
अहं ब्रह्मास्मि, आत्मा का स्वर,
अद्वैत में बसा, जीवन का मर्म ।

न कोई भेद है, न कोई दूरी,
सब एक हैं, यही सत्य की पूरी ।
ब्रह्म साकार, ब्रह्म निराकार,
एक ही शक्ति, आत्मा का दुआर ।

जीवन की धारा, एक ही प्रवाह,
आत्मा और ब्रह्म,
दोनों का एक रूपाह ।
न जन्म है, न मृत्यु का कोई सवाल,
ब्रह्म है अस्तित्व,
यही जीवन का हाल ।

सच्चे सुख की खोज, ब्रह्म में छुपी,
आत्मा से ही, हर बंधन से मुक्ति ।
परमात्मा साकार या निराकार,
सब में बसी है, एक ही साकार ।

वेदों में बसी है, सत्य की वाणी,
ब्रह्म का अस्तित्व,
जगत की निशानी ।
आत्मा और शरीर, न कोई भेद,
यही अद्वैत का संदेश है
सत्य का फेर ।

जीवन का सार है, अद्वैत का ज्ञान,
सब कुछ ब्रह्म है, यह परम विधान ।
न मन का मोह, न देह का ध्यान,
सत्य में बसी है,
आत्मा की शांति का मान ।

अहंकार का मिटना,
यही जीवन की राह,
ब्रह्म के साथ एक हो,
यही है मोक्ष की चाह ।
वह ब्रह्म अज्ञेय, वह ब्रह्म ज्ञेय,
हर रूप में वही,
यही अद्वैत का प्रकट दृश्य ।

ब्रह्म का अनुभव, भीतर ही बसता,
वही जीवन का उद्देश्य,
वही ब्रह्म का गीत गाता ।
सब रूपों में एकता,
यही जीवन का सत्य,
ब्रह्म की छवि में छुपा है
हर अस्तित्व का प्रकट ।

कर्म से न भागो, आत्मा में डूबो,
ब्रह्म का ध्यान रखो,
वही सच्चा जीवन सबको ।
न कोई स्थान, न कोई काल,
ब्रह्म में समाहित है, सभी का हाल ।

ब्रह्म से जड़, ब्रह्म से चेतन,
सब कुछ एक है,
यही अद्वैत का मंत्र ।
जीवन में हर अनुभव,
आत्मा से जुड़ा,
अद्वैत के मार्ग पर,
शांति का रूप रचा ।

न कोई देवता, न कोई शक्ति,
ब्रह्म में सब एक है, यही सच्ची शक्ति ।
जीवन में हर धड़कन,
ब्रह्म का अहसास,
यही सत्य है,
यही जीवन का विश्वास ।

ब्रह्म का ध्यान में, साकार की शांति,
यही सत्य है, यही आत्मा की बाती ।
आत्मा की गहराई में बसी है,
ब्रह्म की कांति,
यही जीवन का सत्य,
यही मोक्ष की शांति ।

आत्मा ब्रह्म है, ब्रह्म आत्मा है,
हर रूप में एकता,
यही सत्य का विस्तार है ।
अंतःकरण से देखो, ब्रह्म का प्रकाश,
यही जीवन का लक्ष्य,
यही आत्मा का रास ।

ब्रह्म के ध्यान में, साकार की शांति,
यही सत्य है, यही आत्मा की बाती ।
आत्मा की गहराई में बसी है,
ब्रह्म की कांति,
यही जीवन का सत्य,
यही मोक्ष की शांति ।

न कोई द्वैत, न कोई भेदभाव,
ब्रह्म में सब समाहित,
यही है अद्वैत का भाव ।
कर्म से मुक्ति, केवल ब्रह्म में है,
यही सत्य है, यही मोक्ष की राह ।

जीवन का हर अनुभव, ब्रह्म से जुड़ा,
अद्वैत का सत्य,
जो जीवन में हर जगह फूला ।
ब्रह्म से ही अस्तित्व है,
ब्रह्म में ही जीवन की राह,
यही अद्वैत का सत्य है,
यही जीवन का उद्देश्य का ज्ञान ।

सच का बाजार

– श्री. लिली मित्रा,
फरीदाबाद, हरियाण

दुनिया में कितने सच हैं,
जितने आदमी...उतने सच
सच अब अभेद्य दीवारों के पीछे छिपकर नहीं रहता
सबके पास अपने–अपने कैमरे हैं
अपने– अपने माइक,
हर कोई दिखा रहा है अपना सच ।
चीख चीख कर बताया जा रहा है सच ।
कुरेद कुरेद कर खोदा जा रहा है सच ।
क्यों इतना जरूरी हो गया है बोलना सच ?
क्या झूठ के आततायी साम्राज्य से तंग आ गई है कलयुगी सभ्यता...



जो किसी मछली बाजार की तरह किचपिचाता
खुद की बोली लगाता बेचा जा रहा है सच –
मेरा सच ज्यादा चुभता है
मेरा सच ज्यादा खुरदरा है
मेरा सच ज्यादा दर्दीला है ।
हर कोई उघाड़ देने पर अमादा है
तर्क के फ़ार्सेव से पतली से पतली
मर्यादा की झीनी परत को
कर देना चाहता है नंगा सच को
नग्न सच का भदेसपन
लौटा पाता होगा मूल्यों
और नैतिकता की लूटी हुई अस्मत ?
मिलता होगा क्या सुकून ?
महसूस होता होगा फ़क्र – 'जो भी कहूँगा सच कहूँगा...सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगा...' कहते हुए ?
चरितार्थ हो रही है कहावत पूरी तरह – 'सच का बोलबाला झूठे का मुँह काला'...
काला मुँह लिए झूठ झेल रहा है अवसाद
कर लेगा आत्महत्या
बिना कोई सुसाइड नोट लिखे
और सच की किलबिलाती भीड़ में
आदमी अस्त व्यस्त सा
हैरान परेशान सा
छाँटता दिखेगा
सबसे सच्चा सच...

नई सोच है (छंद-मुक्त)

– डॉ. नीलू सक्सेना कस्तूरी,
भोपाल, म.प्र.



नई सोच है नई चेतना नौ दिन पर्व मनाएँ क्यों ?
केवल चैत्र और क्वार महीने में नवरात्र मनाएँ क्यों ?
बने भक्त हैं चार दिनों के भूल बाद में जाते क्यों ?
नौ दिन पूजा करते जिनकी नोच-नोच कर खाते क्यों ?
लोभी दानव नरभक्षी पत्नी को बहुत सताते क्यों ?
लाखों दहेज में लेने पर भी और दहेज मँगवाते क्यों ?
लोभ न पूरा होने आत्म-दाह करवाते क्यों ?
नौ दिन की पूजा करने का बस ये ढोंग रचाते क्यों ?
बेटी भार सी लगती गर्भ में ही मरवाते क्यों ?
बेटी है दो कुल की थाती नहीं समझ ये पाते क्यों ?
एक तरफ़ है राह प्रगति की चाँद सितारों से आगे
दूजी ओर है निशा कालिमा नरभक्षी से डर भागे,
जब तक ख़त्म नहीं होती हैं हत्याएँ इन निरपराधों की
पूरे वर्ष हम पर्व मनाएँ नहीं ये केवल नौ दिन की,
या देवी सर्वभूतेषु कह बेटी का गुणगान करें
बेटी भार नहीं इस युग में शक्ति का सम्मान करें ।



मृगतृष्णा

-श्री. महेन्द्र मद्धेशिया,
सिद्धार्थनगर, उ.प्र.

विकास के नाम पर हो रहा विनाश,
जंगल कटते जा रहे,
क्या यही है प्रगति की सही पहचान ?
पेड़ों के झुरमुट में, जिनका था आशियाना,
आज वे पशु-पक्षी बेघर हो गए हैं ।
जंगल, जिनकी थी एक समृद्ध और सुंदर दुनिया,
अब वे पूरी तरह से बिखर चुके हैं ।

मनुष्य की महत्वाकांक्षा ने सब कुछ लूटा,
और उसे प्रगति का नाम दिया ।
इससे कुछ न हुआ, और न होगा,
बस मृगतृष्णा में जीवन को खो दिया ।

ललकार

– श्री. गिरेन्द्रसिंह
भदौरिया 'प्राण',
इन्दौर, म.प्र.



बंशी नहीं बिगुल बजने दो, धुआँधार हो जाने दो ।।
दुश्मन युद्ध चाहता है तो, एक बार हो जाने दो ।।
रोजरोज की किचकिच से यदि, पिण्ड छुड़ाना है तो फिर,
जो होगा देखा जायेगा, आर पार हो जाने दो ।।
बेशक हमने पक्ष लिया है, आजीवन उजियारों का ।।
सदा वार झेला है हमने, खुले छिपे अँधियारों का ।।
लेकिन लिए आँख में आँसू, सहनशीलता बोल उठी,
ऐसे उजले दिन से अच्छा, अन्धकार हो जाने दो ।।
जो होगा देखा जायेगा, आर पार हो जाने दो ।।
दुश्मन युद्ध चाहता है तो, एक बार हो जाने दो ।।
मरने और मारने का प्रण, लेकर घर से निकल पड़ो ।।
दुश्मन की छाती पर जमकर, लावे जैसे उकल पड़ो ।।
तड़प उठे क्रूरता बैर की, सहम उठे संहारों से,
सदियाँ भुला न पाएँ ऐसा, चीत्कार हो जाने दो ।।
जो होगा देखा जायेगा, आर पार हो जाने दो ।।
दुश्मन युद्ध चाहता है तो, एक बार हो जाने दो ।।
किसमें कितना ज्यादा दम खम, अब दिखलाना ही होगा ।।
बलिदानी भावों का परचम, फिर लहराना ही होगा ।।
भले प्रलय के पर्वत टूटें, महाकाल कलिकाल हिलें,
तीनों लोक थरथरा जाएँ, जीत हार हो जाने दो ।।
जो होगा देखा जायेगा, आर पार हो जाने दो ।।
दुश्मन युद्ध चाहता है तो, एक बार हो जाने दो ।।
यद्यपि कवि का ध्येय नहीं है, मानव को मानव मारे ।।
सपने में भी नहीं समर्थन, हिंसा का सुन लो प्यारे ।।
पर निर्दोषों के हत्यारों, की हत्या मजबूरी है,
फिर चाहे यह दुराचार हो, दुराचार हो जाने दो ।।
जो होगा देखा जायेगा, आर पार हो जाने दो ।।
दुश्मन युद्ध चाहता है तो, एक बार हो जाने दो ।।
जंग हुई तो तय है स्तुति भी निन्दा हो जायेगी ।।
भीषणता से मृत्यु हार कर शर्मिन्दा हो जायेगी ।।
लेकिन जब परिणाम मिलेंगे तो ऐसा मन बदलेगा,
जिओ और जीने दो वाली अड़ ज़िन्दा हो जायेगी ।।
इसीलिए कहता हूँ वीरो, धारदार हो जाने दो ।।
जो होगा देखा जायेगा, आर पार हो जाने दो ।।
दुश्मन युद्ध चाहता है तो, एक बार हो जाने दो ।।

वसुंधरा की पुकार
(पृथ्वी दिवस विशेष)

–श्री. मोनिका डागा
'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु



वसुंधरा कर रही आर्द्र करुण पुकार,
हे मानव ! मत करो इतना अत्याचार,
मातृभूमि, कर्मभूमि, तुम्हारी माँ हूँ मैं,
अनुचित है तुम्हारा ये घृणित व्यवहार ।

अतिशय कर रहे हो तुम जंगलों का दहन,
अत्यधिक प्राकृतिक संपदाओं का खनन,
पर्यावरण प्रदूषण से दूषित हो रही हूँ मैं,
असहनीय गहन पीड़ा हो रही हैं अंतर मन ।

परिवर्तन है गहरा उथल पुथल हैं मची,
समझाऊँ कैसे तू हो गया हठी व लालची,
तेरी महत्वाकांक्षाओं से तड़प रही हूँ मैं,
अन्य जीव जन्तु हुए घायल बात कहूँ सच्ची ।

ईश ने आनंद से सृष्टि का सृजन किया,
तूने खिलवाड़ मचाया प्रेम को भंग किया,
तेरे अमानवीय कृत्यों से बहुत क्रोधित हूँ मैं,
तूने मेरी स्मिता, सुंदरता को शर्मसार किया ।

अहंकारी बन सीमाओं का तू करे उल्लंघन,
बड़ा क्रूर विनाशकारी है ये तेरा पागलपल,
भयावह कष्टों से पीड़ित हो धूंज रही हूँ मैं,
क्या कलयुग में ऐसे करते हैं माँ का वंदन ?

देख हवा पानी आकाश कहर बरसा रहा,
मेरी चेतावनियों से भी तू नहीं मान रहा,
तापमान हुआ ज्यादा झुलस रही हूँ मैं,
क्यों माँ का दुःख तुझे महसूस नहीं हो रहा ?

एक दिन ये धैर्यशील धरा हो जाएँगी राख,
बिछुड़ जाएँगे मेरे बच्चे सारे डूबेगी साख,
आएगा प्रचण्ड प्रलय नष्ट हो जाऊँगी मैं,
समय रहते यदि नहीं खुली जो तेरी आँख ।

SHABARI SIKSHA SANSTHAN
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
& 0427-4265414 0427-4552100
Visit us @ https://shabari.in

A glance about Vani Vikas

Answers for the Frequently Asked Questions.....

Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-

Why Vani Vikas exams are conducted ?

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

Who conduct the Vani Vikas exams ?

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

During which months that Vani Vikas exams are conducted ?

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

How many levels are there in Vani Vikas exam ?

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can't do more than one level at the same time, in the same way you can't able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in www.shabari.in.

Who will conduct the Vani Vikas exam ?

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

Is Vani Vikas worth for students ?

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

Details of the books and exam fee :

Name of the Exam	Fees	Name of the Exam	Fees
Vani Vikas Grade - 1	₹ 250.00	Vani Vikas Grade - 5	₹ 290.00
Vani Vikas Grade - 2	₹ 260.00	Vani Vikas Grade - 6	₹ 300.00
Vani Vikas Grade - 3	₹ 270.00	Vani Vikas Grade - 7	₹ 310.00
Vani Vikas Grade - 4	₹ 280.00	Vani Vikas Grade - 8	₹ 320.00

How to pay the examination fee ?

Kindly pay exam fee only through
our web portal @ **https://shabari.in**

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).



महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

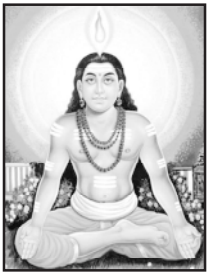
पेरुमिष़लै कुरुम्ब नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

शिव गाथाओं से भरी पड़ी है तमिलनाडु की यह भक्ति भूमि
कहा जाता है भक्तों से हर बार ही तेन्नाडुडय शिवने पोटरी
उत्तर में है कैलाश पर्वत जहाँ विराजते महादेव शिव शंकर
दक्षिण में अधिक पूजे जाते हैं महादेव बनकर लोगों के प्रियंकर
दक्षिण में स्थित है महादेव के अनेक अनेक मंदिर अति सुंदर
महादेव की जयकार करते लोग कहते दिल से दक्षिणेश्वर
तिरसठ ऐसे नयनमार रहे जो शिव को भजे शिव में जा मिले
हर एक की अपनी अलग है कहानी शिव है उनकी निशानी ।

चोल साम्राज्य शिवजी का ही साम्राज्य वह ठहरा शिव भक्ति बहती
चोल राज्य के शासन पर फलने फूलने लगा था पेरुमिष़लै नगार
पेरुमिष़लै नगर में जन्म लिए थे शिव भक्त महान नायनार
कुरुम्ब जात के थे बने रहे ये उस कुल के महत्वपूर्ण नेता
अपना काम वे करते रहते थे आनंद मग्न होकर मन लगाकर
अनुदिन वे किया करते थे सेवा शिव के भक्त को खिलाकर
त्रिपुंड लगाकर जो भी दिख जाते उन्हें वह प्यार सहित अपनाते
भरपेट खाना खिलाकर उनके आशीर्वाद ये विनयपूर्वक पाते ।

प्रीति बड़ी इनकी महान शिव भक्त श्री सुंदरमूर्ति नायनार पर
चित्त में उनको भी भर लेते ये महादेव के महान चित्र सहित
भक्त की भक्ति भक्त की पूजा
भगवान को ही दे देती है



श्री सुंदरमूर्ति नायनार के प्रति भक्ति अपनाकर भक्ति अपनाए
भक्त को अपना मार्ग बनाकर भगवान तक ये पहुँच पाये
शिव भक्त की पूजा करने से शिव की पूजा हो जाती है
जिंदगी पेरुमिष़लै कुरुम्ब नायनार की यही सिखाती है
झलकता एक उदाहरण बनकर इनकी जीवनी चमकती है ।

महान योगी बने रहे श्री पेरुमिष़लै कुरुम्ब नायनार
अणिमा–महिमा–गरिमा आदि अष्ट सिद्धि के नायक ठहरे
बड़े योगी थे बैठे रह जाते योग की अवस्था में अपने आपको भूलकर
बड़ी–बड़ी बातें भी जान लेते यह अपने ज्ञान के चक्षु खोल कर
रुके बिना चल रहा था काम इनका शिवभक्तों की सेवा
मौके कभी न खोते थे ये करने शिव भक्तों की सेवा
प्रीति बढ़ने लगी श्री सुंदर मूर्ति नायनार के प्रति हर घड़ी
भक्ति के साथ योग में डूबते रहते पेरुमिष़लै कुरुम्ब नायनार ।

शिव महान की महान कृपा बरसाने वाली थी उनपर अभी
सुंदर मूर्ति को स्थान देने वाले थे अपने चरण के पास शिव अभी
भोलेनाथ ठहर जाते भक्त प्रिय हमेशा ठहरते महा कृपालु
सुंदर मूर्ति की शिव भक्ति से बहुत प्रसन्न हो गए महादेव
लाने उनको अपने पास तक सोचे
अति सुंदर बहुताधिक गंभीर सफेद हाथी शिव महान तब भेजे
हाथी पर बैठकर जाने ही वाले थे सुंदर मूर्ति शिव के यहाँ
योग में बैठे अपनी महान शक्ति से इसे ये पहचान जाते
सुंदर मूर्ति को सस्नेह स्वागत करने भगवान शिव तक जाने को ठाने ।

अपनी आत्म दृष्टि से जब खबर मिली सुंदर मूर्ति की
आत्मत्याग के लिए तैयार हुए समन पेरुमिष़लै कुरुम्ब नायनार
योग मुद्रा में बैठ गए शिव का नाम मन में तब–जाप कर
अपने प्राण को वे बाहर लेकर आए अति उत्तम तप के बल पर
जीव समाधि में बैठकर शरीर छोड़ें पेरुमिष़लै कुरुम्ब नायनार
शिव की कृपा से शिव में मिले करते रहे वे वहाँ इंतजार
सुंदर मूर्ति का स्वागत करने पहुँच गए शिव के चरणों पर
वक्त से प्यार कर पहुँच गए यह भगवान के सुंदर चरणों पर ।

कुरुम्ब नायनार अमर, शिव के भक्त महान ।
सुंदर मूर्ति से प्यार, दिखा दिया शिव चरण ।।



मातृ दिवस पर विशेष

– श्री. भूपसिंह 'भारती',
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

माँ सच्ची करतार है

माँ सच्ची करतार है ।
माँ ही रचनाकार है ।
माँ ममता की छाँव है,
माँ सच्ची दातार है ।

रोते को भी हँसाये माँ ।
मुझको खूब खिलाये माँ ।
खुद गीले में सो करके,
सूखे में मुझे सुलाये माँ ।

माँ ही पालनहार है।
माँ देती प्यार दुलार है ।
अमृत पान कराती है,
माँ सुखों का भंडार है ।

माँ मेरा सम्मान है ।
माँ मेरी मुस्कान है ।
माँ ही इस संसार में,
सच मानो भगवान है ।

बाल कविता

माँ

– श्री. भूपसिंह 'भारती', महेन्द्रगढ़, हरियाणा

सबसे सुंदर सबसे प्यारी,
हो सबसे भोली–भाली माँ ।
ये दशा दिशा बदली मेरी,
इस जीवन की खुशहाली माँ ।

तुम्हीं हो करुणा सागर माँ
हो ममता की गागर तुम्हीं ।
प्यारी प्यारी सूरत तेरी,
तुम से प्यारा कुछ नहीं ।

शिक्षा और संस्कार की माँ,
मिली तुम्हीं से दौलत माँ ।
आज मैं जो कुछ भी हूँ,
वो सब तेरी बदौलत माँ ।

हँसना–रोना, खाना–पीना,
सिखलाई ये दुनियादारी ।
भाईचारा प्यार सिखाया,
माँ की महिमा है न्यारी ।

सारे जग से न्यारी लगती,
तुम सबसे हो खास माँ ।
तुम से जज्बा जोश मेरा,
तुम से जीवन में उजास माँ ।

मेरी प्रेरणा तुम हो माँ,
तुम्हीं हो मेरी शक्ति माँ ।
तुम्हीं आस विश्वास हो मेरा,
तुम से ही मेरी मुक्ति माँ ।

हर बूंद कीमती है, जल ही जीवन का सार है ।



जागो भारत जागो...

– डॉ. पी.आर. वासुदेवन शेष,
चेन्नै, तमिलनाडु

जागो भारत जागो
जागो भारत के नौनिहालो जागो
जागो भारत के वीर सपूतो जागो
जागो भारत माँ के दूलारो जागो ।।

नयी दिशा के राही बनकर
नयी ऊर्जा विकसाने जागो
नयी किरण की रोशनी लेकर जागो ।।

सांप्रादियकता, आंतकवाद, हिंसा,
शोषण, अत्याचार , भ्रष्टाचार को समूल
मिटाने को देश के कर्मवीरो जागो ।।

राष्ट्र सोच को, राष्ट्र कर्म को,
राष्ट्र विकास, राष्ट्र हित को
राष्ट्रधर्म को राष्ट्र परमार्थ को
निभाने राष्ट्र के महान प्रहरियो जागो ।।

ले लो नया संकल्प हृदय में
माटी की लाज बचाने को
भारत को आंतक से मुक्ति दिलाने को
भारत के सर्वजन जागो ।।

दिया जो वचन भगत सिंह, राजगुरु,
सुखदेव, नेताजी महान नेताओं को
उनके बलिदानों के सम्मान में जागो ।।



लक्ष्य पर तेरा निशाना हो

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

लक्ष्य पर तेरा निशाना हो
मंजिल ही तेरा किनारा हो
मन क्यों दौड़ाते हो बेवजह
लक्ष्य में रहे ध्यान सारा हो ।

अर्जुन सा, तुझमें दृढता हो
ध्यान में तेरी, एकाग्रता हो
लक्ष्य तू ही, भेद सकता है
तेरे विश्वास में, महानता हो ।

एकलव्य जैसा अभ्यास हो
सफलता का ये आभास हो
दृढ लगन तुझमें ये खास हो
मन में अटूट तेरा विश्वास हो ।

तू अटल है, शेर-सा निडर है
तुझमें ही छिपा सिकंदर है
तुझमें वह अडिग, साहस है
तेरे हाथों ही तेरा मुक़द्दर है ।

पानी है तो सब है, इसे
व्यर्थ न बहाओ कभी ।



मेरे घर का आंगन

– श्री. तेज नारायण राय, दुमका, झारखंड

मेरे घर का आंगन
भले ही कच्ची मिट्टी का है
पर पता नहीं ऐसा क्या है
मेरे घर के आंगन में
कि गाँव की औरतें
यहीं आकर बैठी रहती हैं अक्सर
और बतियाती हैं अपना सुख-दुख

बच्चे भी यहीं इसी आंगन में
मचाते हैं उछल कूद

फेरीवाला हो या चूड़ीहारिन
यहीं इसी आंगन में आकर बैठती हैं

कथावाचक भी यहीं इसी आंगन में
तुलसी चोरा के पास बैठ सुनते हैं
सत्यनारायण की कथा
और बबूल व तुलसी पर
चर्चा के बहाने बताते हैं
जीवन में अच्छे बुरे कर्मों का भेद

कथावाचक जब बांचते हैं कथा
घर के आंगन में
तब गाँव की औरतें ही नहीं
बड़े बूढ़े बुजुर्ग भी
आकर बैठते हैं इस आंगन में
और धर्म कर्म पर चर्चा करते
जीवन का मर्म समझते हैं

ऐसे में जब मेरा पड़ोसी
अपने पक्के मकान की छत से
अहम और घमंड में चूर होकर
देखता है मेरे हँसते खेलते आंगन को
तब मेरी माँ के चेहरे की झुर्रियों से
झांकता है मेरे घर का संस्कार

तब मुझे कच्ची मिट्टी से बने
अपने घर के आंगन पर होता है नाज
और मैं गौरवान्वित होता हूँ
अपने घर के आंगन में खड़े होकर

आज जब गाँव में बढ़ते जा रहे हैं पक्के मकान
और घरों सबसे घरों से
गुम होता जा रहा है आंगन

तब ऐसे में मुझे
मेरे घर का आंगन देता है संदेश
कि आंगन है तो बची है
घर की आत्मा
बचा है गाँव घर में
एक दूसरे के घर
आने-जाने का रिवाज़

इसलिए घर की आत्मा को बचाना है
तो घरों से गुम होते जा रहे
आंगन को बचाओ
क्योंकि आंगन है तो घर 'घर' है
बिन आंगन के घर सूना-सूना है ।



श्रीराम सा बनना होगा

– श्री. विनोद प्रसाद, पटना, बिहार

निज वैभव का मोह त्याग कर
मर्यादा का पालन करना होगा,
यदि रामराज्य को लाना है तब
हमको श्रीराम–सा बनना होगा ।

सत्ता का लोभ भी त्याग दिया
रघुकुल की रीति निभाने को,
वनगमन सहर्ष स्वीकार किया
पितृ वचन की लाज बचाने को,
बनकर आज्ञाकारी पुत्र सदा ही
सेवा मात–पिता की करना होगा ।
निज वैभव का मोह त्याग कर
हमको श्रीराम–सा बनना होगा ।

प्रजा के दुख से दुखी हो राजा
किसी आम जन को कष्ट न हो,
स्वच्छ ईमानदार प्रशासन हो
प्रतिनिधि कोई भी भ्रष्ट न हो,
शासक नहीं सेवक बनकर ही
राजधर्म का पालन करना होगा ।
यदि रामराज्य को लाना है तब
हमको श्रीराम सा बनना होगा ।

कपट क्रोध अहंकार छोड़कर
प्रेम दया और त्याग को जानो,
मंदिर में दीप जलाने से पहले
मर्यादा पुरुषोत्तम को पहचानो,
जय श्रीराम को जपना है तब
हृदय में प्रभु को धरना होगा ।
निज वैभव का मोह त्याग कर
हमको श्रीराम–सा बनना होगा ।

आचरण श्रीराम का जीवन में
जो व्यक्ति नहीं अपनाता है,
करता है दिखावा रामभक्ति का
वह मिथ्या ही ढोंग रचता है,
मन में भक्ति हो श्रीराम प्रभु की
उनके आदर्शों पर चलना होगा ।
यदि रामराज्य को लाना है तब
हमको श्रीराम–सा बनना होगा ।



वे दिन भी क्या दिन थे

– श्री. गजानन पाण्डेय, हैदराबाद, तेलंगाना

वे दिन भी क्या दिन थे
जब दिलों में प्यार था
दोस्तों का साथ था
न छोटे– बड़े का भेद था
दिल से दिल का मेल था ।
सुख–साधनों की कमी थी
परंतु दिल में बड़ी जगह थी ।
पर अब वो बात कहाँ !
हर तरफ झूठ व पाखंड है
हर चेहरे के कई रूप हैं
मक्कारी से भरा व्यवहार है
न आदमी को आदमी से प्यार है ।

संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास

– श्री. ओम अग्रवाल,
मुंबई, महाराष्ट्र

दोहा

जाके हिय श्रीराम की,
छवि ही पुण्य अनूप ।
बबुआ तुलसी जानिए,
श्री संतन के भूप ।।

चौपाईयाँ

जाके साँस साँस सिय रामा ।
जाके नयन नेह सुख धामा ।।
जे हनुमत के नित गुण गाए ।
जे लक्षमन से प्रीत जगाए ।।
जाके तन मन श्री हनुमाना ।
भरत–शत्रुघन जाके प्राना ।।
राम कथा जो सोच विचारी ।
राम चरित मानस लिख डारी ।।
जा तन रामहि राम समाए ।
जे प्राणन में राम बसाए ।।
जे नित राम भजै दिन राती ।
जाके राम दिया अरु बाती ।।
भजै राम जो साँझ सकारे ।
जाके राम परम प्रिय प्यारे ।।
जाकी भूख प्यास श्री रामा ।
जाको राम चरण सत धामा ।।
जाके हनुमत परम सनेही ।
जाके हिये राम वैदेही ।।
जाको जीवन मरण राम को ।
जाको कीरत करण राम को ।।
जे नित राम चरित गुण गावे ।
अस तुलसी को को बिसरावे ।।
बबुआ चूक कहूँ हो भाई ।
क्षमा करें श्री सत्य गोसाईं ।।

दोहा

चरण कमल तुलसी नमूँ,
नमूँ नेह श्रीराम ।
बबुआ पावन पुण्य पल,
शत–शत करूँ प्रणाम ।।



बाल कविता

आम की डाली

– श्री. टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला',
घोटिया–बालोद, छत्तीसगढ़

झुकी आम की डाली ।
अति सुंदर और निराली ।
मंद पवन के चलने से,
हौले–हौले पत्तियाँ हिले ।
छूते हैं एक–दूसरे को,
जैसे दो भाई गले मिले ।
टहनियों में खूब इतराते हैं,
छोटे–बड़े हरे पीले फल ।
बावरा बन झूलते हैं,
मस्त मीठे रसीले फल ।
फलों से लदा पेड़ देख,
बंदर बजाए ताली ।
झुकी आम की डाली,
अति सुंदर और निराली ।



वो ख़त ! वो चिट्ठियाँ !

– डॉ. यशोधरा भटनागर, देवास, म.प्र.

वो भी क्या दिन थे
डाकिए की साइकिल की घंटी
दिलों में उम्मीद जगाती थी
एक ख़त में माँ की दुआएँ होतीं थीं
तो दूसरे में प्रेम कहानी भागती थी

दरवाजे दस्तक देता डाकिया
हाथ में रख देता वो चिट्ठियाँ
चिट्ठियाँ जो थीं प्यार भरी
स्याही में भी एक खुशबू–सी घुली
बातें खेत–खलिहान, दुनिया–जहान की

कोई बाँचता सुख की खबर
गोरी मुस्काती नाम अपना देखकर
रचे जाते थे स्याही से रिश्ते
वो अक्षर अपनापन लिए
कुछ शब्द नम, भीगे–भीगे

अब न वो खत, न वो दस्तकें हैं
चौखटों पर नोटिस आते हैं
दस्तखतों से संबंध टूट जाते हैं
नफरतों की अर्जियाँ हैं
गवाहों में उलझे टूटते रिश्ते हैं
इंतजार है उन चिट्ठियाँ का
जो फिर लौटा लाएँ
अपनों का प्यार अपनों की चिंता
प्यार की स्याही से प्यार भरी
चिट्ठियाँ फिर लिखी जाएँ



चल मनवा उस पार

– श्री. पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा', नागपुर, महाराष्ट्र

पंछी बन उड़ जा रे मन
नदी के पार ले चल रे तन
यहाँ काँटे हैं मन को लगते
वहाँ सुगंधित पुष्प है सब जन ।
यहाँ पत्थर दिल मानव हैं रहते
वहाँ मानव दिल सब हैं कहते
यहाँ सहज नहीं जीवन डगर
हर कदम पर काँटे सब सहते ।
सफल पथिक बन उड़ जा रे मन
कहते होगा नहीं यहाँ कोई बन
उर में पीड़ा बसती सब ओर
आँखों में यहाँ रहता सब ओर धन ।
शब्दों में मधु की कनी घोल ।
धरती भी नित घूमती है गोल
पहेली बनी है जीवन सबका
भावों का यहाँ नहीं कोई मोल ।



हमारी बिटिया हमारी शान

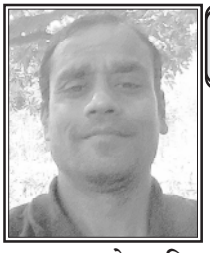
– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

हमारी बिटिया हमारी शान है,
यह देखकर दुनिया हैरान है ।
नाम कर रही है हर क्षेत्र में,
बिटिया से अपनी पहचान है ।
हमारी बिटिया...

घर आंगन की खुशी है बिटिया,
वह मेरी जिंदगी की मुस्कान है ।
लोग बेटा को वरदान मानते हैं,
मेरे लिए बिटिया ही वरदान है ।
हमारी बिटिया...

लोग बड़े-बड़े दान किया करते,
जग में सर्वोत्तम कन्यादान है ।
बिटिया हमारी बड़ी काबिल है,
मेरे दिल का वह अरमान है ।
हमारी बिटिया...

सशस्त्र सेना में जाना चाहती है,
रहता सीमा पर उसका ध्यान है ।
मातृभूमि उसके लिए सब कुछ,
उसके लिए सर्वोपरि राष्ट्रगान है ।
हमारी बिटिया...



हिंसा छोड़ो

– श्री. राकेश कुमार,
फतेहपुर, बिहार

सुन, जरा ऐ पाकिस्तान !
है, तुम्हें क्या इसका ज्ञान ?
क्या दिया, तुमने जनता को ?
भय,भूख, कुशिक्षा, अपमान !
जेहादी नारे, उन्मादी छलावा,
जन्नत से बहत्तर हूरों का बुलावा,
अन्य धर्मों के प्रति घृणा को उकसावा,
धर्मांधता को बढ़ावा, हिंसा को चढ़ावा,
क्या हुआ जो हम, बुत के पुजारी हैं,
कण-कण में बसे प्रभु के, आभारी हैं,
विश्व बंधुत्व को माननेवाले संसारी हैं,
शक्ति के उपासक, अत्याचार के प्रतिकारी हैं,
दुष्टों के संहार हेतु, हम भी त्रिशूल धारी हैं,
छल-कपट की राह विनाशी,
क्षणिक सफलता होती आभासी,
धर्म कभी नहीं, रक्त की प्यासी,
सबला है, नहीं यह दुष्टों की दासी,
सज्जनों की है यह, हृदय निवासी,
पापी, हिंसक, दुष्ट भाव की नाशी,
राह प्रेम की है, सदा अविनाशी,
मानव हो, मानवता जानो,
सर्वधर्म समभाव को मानो,
रक्त से अब मिट्टी न सानो,
प्रेम ही पथ है, सच्चा जानो
शाख प्रेम के अब तो थामो,
परहित सच्चा धर्म है मानो
मानवता की राह पहचानो,
छल, प्रपंच और हिंसा छोड़ो,
दया, प्रेम से नाता जोड़ो,
सभी धर्मों का मर्म यही है,
मानवता का कर्म यही है,

अनमोल पापा

– डॉ. गौरव सोलंकी,
बुलंदशहर, उ.प्र.

आप जहाँ भी हों, सुन लीजिए मेरी बात...
पिता जी वह छत है जिसके आगे आसमान भी छोटा है
जब भी अकेला होता हूँ, दिल की सबसे गहरी परतों में सिर्फ आपकी यादें होती हैं ।
आप मेरे पहले दोस्त थे, पहले गुरु, और पहले हीरो भी ।
आपने कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि कुछ कम है मेरी ज़िंदगी में ।
मेरी हर छोटी से छोटी ख्वाहिश को पूरा किया, बिना कुछ कहे...



आपका दिया हुआ प्यार आज भी मेरी सबसे बड़ी ताकत है ।
लेकिन सच कहूँ, पापा...
आपके बिना ज़िंदगी अधूरी सी लगती है।
हर दिन, हर पल... आपको बहुत याद करता हूँ ।
आपकी यादों के सहारे ही जी रहा हूँ ।
कभी-कभी बस इतना कहने का मन करता है – पापा, आप बहुत याद आते हो ।



रोटी

– श्री. देवेन्द्र पाल सिंह 'बर्गली',
नैनीताल, उत्तराखण्ड

नाम रोटी एक तेरे
अर्थ हैं कितने लिए
मिल गई तो कुछ न समझा
ना मिली तो रो दिये ।

बिलबिलाते नौनिहालों
कुपोषित गरीबों के निवालों
सूखी जिनकी बोटी-बोटी
प्राण का संचार रोटी ।

तन मन जीवन खपाते
तिल-तिल रोटी कमाते
मजदूर और मजबूर का
सुकून बल विश्राम रोटी ।

त्याग निज अभिमान को
माँग लेता साधु रोटी
गर बचाना मान तो
घास की बनती हैं रोटी ।

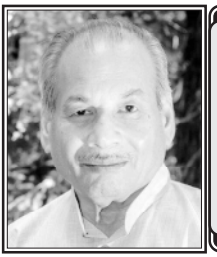
जन्म का कारण है रोटी
प्राण का धारण है रोटी
दुर्भिक्ष में मारण है रोटी
हाय रोटी हाय रोटी ।



अभियान और हताशा

– श्री. चन्द्रकांत खुंटे 'क्रांति',
जांजगीर, छत्तीसगढ़

बीते वर्षा के दिनों पर
देश–प्रदेश में एक मुहिम चालू था
एक पेड़ माँ के नाम
वचन कितना कृपालु था ।
सुर्खियाँ लिखी दिखती
देश के हर राष्ट्रीय अखबार में
हरा–देश हरा–प्रदेश
नर–पशुओं के शुभचिंतक जोरदार से ।
नेता–अभिनेताओं ने भी
टीवियों पर अभियान चलाए थे
संवाददाताओं ने चीख–चीखकर
जनमानस को समझाए थे
गुण–दोष पर विस्तृत चर्चा
खूब करते विशेषज्ञों की टोली थी
बैनर–पोस्टरों से लदे शहर
रेडियों की भी अनुपम बोली थी
पर लुप्त हो गए नेता–अभिनेता
गायब वो अभियान है
रिपोर्टर लगे चाटुकारिता में
विशेषज्ञ लेने गये सम्मान है।
विशाल जंगल उजड़ थे
शुभचिंतक सारे गायब है ।
माँ को ही मारने लगे
जो कुर्सी पर बैठे साहब है ।



जब तक साँस है तब तक आस है

–श्री. कर्नल आदि शंकर मिश्र
'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

जब तक साँस है तब तक आस है,
प्रेम है प्यार है संघर्ष और खटास है,
मेल है मिलाप है, दुआ और शाप है,
बुराई भी भलाई भी और संताप है ।

भाव हैं, कुभाव है, स्नेह, दुर्भाव हैं,
हार है, जीत है, मंज़िल है पड़ाव हैं,
मिलन है विरह है, घर व वनवास है,
निंदा है प्रशंसा है, मर्ज़ है, उपचार है ।

द्वन्द्व प्रतिद्वन्द्व हैं, तिमिर है प्रकाश है,
अमृत है तो विष है, दिन है तो रात है,
आना भी है, तो जाना, निभाना भी है,
अपने पराये, उन्हें अपना बनाना भी है ।

हँसता चेहरा, हँसकर किया काम है,
हँसना शान है, और काम पहचान है,
काम में हो गलती, उसका सुधार है,
गलतियाँ बुरी नहीं, बुरा अनदेखी है ।

अपना कुछ नहीं, केवल प्रेम प्यार है,
आदित्य सब अस्थिर ही एक सोच है
देकर भूल जाना है, पाया तो याद है,
जीवन नश्वर पर मृत्यु निर्विवाद है ।



कर्तव्य बोध

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

जिसने कभी किया ही नहीं
जीवन की तमाम परिस्थितियों पर शोध,
उनसे कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि
उनके अंदर होगा कर्तव्य बोध,
इसके लिए दिमाग के साथ दिल भी चाहिए,
सुस्पष्ट सोच और लक्षित मंजिल भी चाहिए,
हमारे देश के कर्णधारों में,
कुंठित सिपहलसारों में,
यदि कर्तव्य बोध होता,
तो देश की उन्नति की राह में
कोई भी लोकसेवक कांटें क्यों बोता,
इस देश में हुए हैं ऐसे भी लोग महान,
जिनका दर्जा होना था भगवान,
उन सबके योगदान और स्मृतियों को
बहुतों ने मिटाना चाहा,
कुढ़ता में आ उन सबको भुलाना चाहा,
होता कर्म के प्रति लगाव तो
भ्रष्टाचार मुँह बांये न खड़ा होता,
धन कुबेर और अपराधी
नेताओं के दांये बांये न खड़ा होता,
कुछ लोगों के खून में बस चुका है
देश के साथ भयंकर गद्दारी,
प्रगति की राह में जो पड़ रहा भारी,
पता नहीं कब जल पायेगा
कर्तव्यनिष्ठता का जोत,
और कब ला पाएंगे सब
अपने अंदर कर्तव्य बोध ।



एकता

– श्री. सौम्या,
कोवै, तमिलनाडु

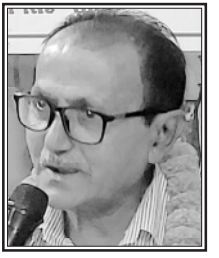
हिन्दु, मुस्लिम, सिखया ईसाई
सबके सब हैं यहाँ भाई भाई
प्रश्न चाहे जो कुछ भी हो
दिल में सदा, एकता बसाओ ।

मंदिर हो या मस्जिद हो
सबसे श्रेष्ठ है देश हमारा
धर्म के नाम से दूरी न बढें
हरेक का हाथ थामकर जावें ।

रंग अलग हो दिल, कह रहें
दिल में, एकता महकने दो
भारत माता है सबसे महानतम
हमारी पहचान वही है वही है धाम ।

ग़ज़ल

– श्री. विनय साग़र जायसवाल,
बरेली, उ.प्र.



जो मिला वो ही मिला बात बनानेवाला
काश मिल जाये कोई दर्द बँटानेवाला

ग़ैर ही ग़ैर ज़माने में नज़र आते हैं
कोई तो होता मुझे अपना बतानेवाला

वो जिसे चाहे अता कर दे बुलंदी उसको
रोक पायेगा भला कौन ज़मानेवाला

काश कुछ सोच के इनसान वो बोले हमसे
उसका हर लफ्ज़ है इक आग लगानेवाला

तशनगी तारी है मुद्दत से मेरे होंठों पर
कौन था तेरे सिवा प्यास बुझानेवाला

इसलिए हमने हरिक बात गवारा कर ली
रूठ जायें तो है अब कौन मनानेवाला

छोड़ मौजों के हवाले दी यूँ कश्ती अपनी
अब वही एक है बस पार लगानेवाला

चाहे जितने भी करे वादे वो अब तो साग़र
उसके वादों पे भरोसा नहीं आनेवाला



अजनबी

– श्री. मोहित.जे. संतोष, श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

कोई हमारे जीवन में है
और किसी की जीवन में हम
कुछ लोग देते खुशी
कुछ लोग देते हैं गम ।

हर एक की जिंदगी में है
खूब सारे अजनबी
जो सीखाते हैं सबको
क्या गलत है और क्या सही ?
कुछ देते हैं हमको यादें
कुछ देते हैं हमको वादे
ये सदा बनते हैं एक पात्र
सिखाते हैं जिंदगी की यात्रा ।

सबक या सम्मान
प्रेरणा या अपमान
इन अजनबियों को स्वीकार करो
खुश रहो खुशी फैलाओ ।



खेल भोले का

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी 'राम', इन्दौर, म.प्र.

जब–जब आस बंधी भोले से,
पार लगाई भोले ने,
जन्म–जन्म का साथी बन कर,
राह सधाई भोले ने ।
जब–जब आस बंधी...
जीवन है श्वांसों का मेला,
खेल अजब भोले ने खेला,
आना–जाना कब किसका है,
भेद नहीं भोले ने खोला ।
जब–जब आस बंधी...
भावों की देहरी पर भोले,
हम अपना शीश झुकाते हैं,
चिंताओं की मनभर गठरी,
छोड़ खुशी से आते हैं ।
जब–जब आस बंधी...
छूट जाएगा साथ कभी ये,
आस नहीं हमनें छोड़ी,
भोले की ही बांह पकड़कर,
पकड़ा दी जीवन डोरी ।
जब–जब आस बंधी...
आओ भोले के संग मिलकर,
खुशियों का एक ताल भरें,
लगा भक्ति की डुबकी सारे,
खुद को मालामाल करें ।
जब–जब आस बंधी...

ग़ज़ल

– श्री. शिवनन्दन सिंह,
जमशेदपुर, झारखंड



हर पल दर्शन को तरसे पागल नयना मेरे,
तुम हो शायद इस भ्रम में रहते नयना मेरे ।
जीवन के कितने बसंत गुजरे कई जमाने,
फिर भी मन ये भरा नही कुछ ढूढें नयना मेरे ।
उजड़े चमन बहारों के जो थे बचपन के न्यारे,
उन यादों के लिए झरोखे खोजें नयना मेरे ।
गुमसुम बैठा इनसान यहाँ यादों के लिए सहारे,
पलकें मीचें आँसू रोकें छुप–छुप रोते नयना मेरे ।
मत खोलो यादों का पिटारा, दिल को नहीं टटोलें ।
रुकी लेखनी 'शिव' की अब झांके न नयना मेरे ।



जीवन एक पाठशाला है

– डॉ. अलका अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

हम सब इससे सबक सीखते,
यही गुरु है, पाठ पढ़ाता ।
हर दिन का सूरज लाता है,
नई मुश्किलें, नई उलझनें ।
जीवन एक पाठशाला है ।
सुख आता तो दुख जाता है,
दुख आता तो सुख जाता है,
सुख में चाहे कुछ ना सीखें,
दु:ख सिखा कर ही जाता है ।
जीवन एक पाठशाला है ।
जैसे मौसम बदला करते,
वैसे जीवन नित नूतन है ।
कभी फूल हैं, कभी शूल हैं,
शूल हमें कुछ सिखला जाते ।
जीवन एक पाठशाला है ।
जीवन एक चुनौती है, ये,
राजमार्ग ना सीधा सादा ।
इससे कर मुकाबला डटकर,
कर ले ये मजबूत इरादा ।
जीवन एक पाठशाला है
अनुभव का भंडार बढ़ेगा,
संकट संकट नहीं लगेगा ।
सारे सबक याद होंगे जब,
कभी किसी से नहीं डरेगा ।
जीवन एक पाठशाला है ।



परम सम्मानीय संपादक महोदय,

आपने अपने संपादकीय में सही और उचित पहलू को उजागर किया है, जिसमें माता-पिता का घरेलू समस्याओं के कारण बच्चों को छोड़कर काम पर जाना और उन्हें पर्याप्त समय न दे पाना शामिल है ।

यह बच्चों का दुर्भाग्य है कि उन्हें घर में वह माहौल उपलब्ध नहीं हो पाता जिसकी उन्हें आवश्यकता है ।

वे बच्चे खुशनसीब हैं जिनके घर में दादा-दादी, नाना-नानी हैं । इनके द्वारा उन्हें प्यार, दुलार, संस्कार और उचित वातावरण मिल पाता है, जिससे उन्हें अपने माता-पिता की कमी महसूस नहीं होती ।

फिर भी, हर पालक को चाहिए कि वह अपने बच्चों को अवश्य समय दे, ताकि बच्चा हीन भावना से ग्रस्त न हो ।

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

नाते – रिश्ते जोड़ने, संबंधों की सीख सिखाने, देश हित में बच्चों का भविष्य बनाने की प्रेरणास्पद संपादकीय के लिए हार्दिक बधाई एवं मेरी दोनों कुंडलिया छंद प्रकाशित करने के लिए सहृदय आभार नमन आदरणीय ।

इसके साथ ही सरसरी निगाहों से पत्रिका का अवलोकन किया, इसमें एक से एक

ज्ञानवर्धक, मनोरंजक लघुकथा, आलेख, काव्य सृजन से सराबोर यह मासिक पत्रिका है ।

यह मासिक पत्रिका 'शबरी' जो तमिलनाडु से प्रकाशित होती है, मेरे द्वारा रचित होली की दो कुंडलिया छंद पृष्ठ संख्या – 31 में प्रकाशित की गई है । मेरे लिए यह हर्ष की बात है, इसके आदरणीय संपादक महोदय का आभार व्यक्त करता हूँ ।

तमिलनाडु में आजकल भाषा को लेकर जो चल रहा है वह तो मालूम ही है । इसके बावजूद देखिए वहाँ हिन्दी भाषा के रचनाकारों की संख्या दिनानुदिन बढ़ती जा रही है एवं बहुत ही अच्छी गद्य–पद्य के रचनाओं की भरमार है । हमें तो उनसे प्रेरणा लेने की जरूरत महसूस होती है ।

पत्रिका की प्रति आप सबों को ससम्मान प्रेषित कर रहा हूँ । 'शबरी' को उँगली से छूने पर 'पी डी एफ' लिंक आएगा, लिंक खोलकर पूरी पत्रिका पढ़ने का कष्ट करेंगे और आपके भेजे भाव–विचार को मैं अग्रसारित कर दूँगा ।

– श्री. विमल कुमार,
पूर्णियाँ, बिहार

प्रणाम श्रीधर जी, शबरी सबरी पत्रिका का अप्रैल 25 अंक पढ़ा । सुगठित और शुभ संपादित अंक हेतु शुभकामनाएँ । लेख, कविता, लघु कथा, कहानी इत्यादि साहित्य की सभी विधाओं को समेटे और तमिल हिन्दी और संस्कृत तीनों भाषाओं की त्रिवेणी बना यह अंक पठनीय है । सुदूर हिन्दी प्रदेश में बैठकर हिन्दी की अलग जगाना अपने आप में बहुत बड़ी बात है आपको बहुत धन्यवाद ।

– डॉ. संगीता सक्सेना,
जयपुर, राजस्थान

नवांकुर

फूल



फूल कितना महकता है
तितलियों को उड़ा लाता है
फूल बड़ा प्यारा है
फूल सबसे न्यारा है ।

– सौर्यांश मिश्रा,
द्वितीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

मुझे आगे बढ़ना है



मुझे आगे बढ़ना है
इस दुनिया में कुछ,
कर दिखाना है
जिन सपनों को खोया था
उन सपनों को पाना है
आगे बढ़ते हुए
खुद को आज़ाद करना है ।
मुझे आगे बढ़ना है ।

– आराध्या राज
द्वितीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

फूल



फूल ज़मीन से उगता है
धीरे धीरे बड़ा होता है
बड़े होकर बनता है पेड़
दुनिया को बनाता सुंदर
और सबकी जान बचाता है ।

– ईमानुएल बेहेरा
द्वितीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

मुझे आगे बढ़ना है



मुझे आगे बढ़ना है
देश का नाम रोशन करना है
मम्मी पापा को सदा खुश रखूँ
ऐसा मुझे कुछ कर दिखाना है ।
मुझे आगे बढ़ना है...

– श्रेयश हर्षिल
द्वितीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

मुझे आगे बढ़ना है



मुझे आगे बढ़ना है
होकर बड़ा,
मैं चाँद पर जाऊँगी
सारी दुनाया को दिखाऊँगी
मुझे कुछ कर दिखाना है
अपने देश को आगे बढ़ाना है ।
मुझे आगे बढ़ना है...

– सृस्टि महापात्र
द्वितीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

मुझे आगे बढ़ना है



मुझे आगे बढ़ना है...
कुछ कर दिखाना है
ढेर सारा पढ़ना है
शिक्षक मुझे बनना है
किसीको डॉक्टर...
किसीको इंजिनियर बनना है
देश का भविष्य गढ़ना है
मुझे आगे बढ़ना है...
कुछ कर दिखाना है...

– अद्रिका राऊत
द्वितीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

इंद्रधनुष



सतरंगी सात रंगों का है
यह इंद्रधनुष,
लाल, पीला, हरा और नीला है
निखरता है जब बारिश में
और भी खूबसूरत हो जाता है,

– हमसिका कुमारी
द्वितीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा

मुझे कुछ बड़ा करना है

मुझे कुछ बड़ा करना है
कल को कुछ बनकर दिखाना है
पढ़कर मैं आगे बढ़ जाऊँगा
एक सच्चा इनसान बन पाऊँगा
मुझे आगे बढ़ना है
कुछ कर दिखाना है...



– स्वयंराज साहू
द्वितीय कक्षा, न्यू स्टेवार्ट स्कूल, कटक, ओड़िशा



मनुष्य का मूल्य

– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

एक इनसान के जीवन में अपनों का मूल्य बहुत अधिक होता है । जब कोई इनसान आपके साथ होता है, तब आपको उस इनसान का मूल्य समझ में नहीं आता है । वही इनसान जब आपसे दूर हो जाता है, तभी उसका मूल्य आपको समझ में आता है । हम उस इनसान को हल्के में लेते हैं और उस इनसान को अपना समझते हैं । किन्तु सत्य यह है कि कोई भी इनसान हमेशा हमारे साथ नहीं रह सकता । उदाहरण के लिए, जब भाई या बहन हमसे दूर पढ़ने के लिए जाते हैं, तभी उनका मूल्य हमें समझ आता है । वरना हम हमेशा उनसे झगड़ा करते रहते हैं और उनके साथ वक्त नहीं बिताते । इसीलिए हमेशा इनसान के साथ वक्त बिताना और उसके मूल्य को समझना ज़रूरी होता है ।



मुहब्बत

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

जब आप उदास हो
जब आप खुश हो
जब आप गुस्से में हों
जब आपको सहारे की जरूरत हो
हमारे दिल के अंदर
जो खुश और वफादार रहता है
पवित्रता और दयालुता
की एक वास्तविक परिभाषा
देखभाल, गौरव, धन और स्वास्थ
सबका है वह मूल ।
आपके हर काम में भागीदार
आपका अर्धांगिनी होकर करती
उससे प्यार करें और उसका समर्थन करें
उसकी प्राथमिकता दें
आपके प्यार को हमेशा सजावे ।



भरोसा और विश्वास

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस
कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक अमीर आदमी था जो अपने काम खत्म करके घर जा रहा था । वह घर जाने की रास्ते में बाहर एक भिखारी को देखा था । जलवायु बहुत ठंडी थी, और उस भिखारी के पास सिर्फ एक छोटा कपड़ा था । वह अमीर आदमी ने गाड़ी से उतरकर बाहर आए, उस भिखारी से पूछा कि, क्या तुम्हारे पास कोई कंबल नहीं है ? उस भिखारी ने उत्तर दिया कि नहीं । उस अमीर आदमी ने बताया कि, ठीक है, तुम यहीं रहो । मैं अंदर जाकर तुम्हारे लिए एक कंबल लेकर आऊँगा । वह घर के अंदर गया । बच्चों और बीवी को देखा, पालतू को देखा, फिर घर का काम किया और थोडा ऑफिर काम करके, खाना खाकर सोने चला गया । जब बिस्तर से उठा तो तब उसको याद आया कि, कल मैंने बाहर एक आदमी को वादा किया था । वह तुरंत एक कंबल लेकर बाहर जाकर देखा, वह भिखारी मर गया था । इस कहानी से हम दो चीजों समझ सकते हैं । अगर हम कुछ चीज़े बात नहीं पूरा कर पाएँगे नहीं कर पाएँगे तो हमें वादा नहीं करना चाहिए । शायद उस आदमी के अपने अंदर के भरोसे पर विश्वास रख के जिंदा रह सकता था । जब उसने किसी और पर भरोसा और विश्वास किया, वह खुद को खो गया था । इसलिए हमेशा किसी और पर भरोसा या विश्वास नहीं रखना चाहिए । हम अपने घरवालों या कोई करीबी दोस्त पर, विश्वास कर सकते हैं जो हमारे लिए अपने जीवन देने के लिए तैयार है । लेकिन किसी नकली वादे पर भरोसा नहीं रखना ।

देववाणी संस्कृत

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

गुरुवायूर कृष्ण भगवंतस्य नारिकेलस्य शृंगं अस्ति वा ?

एकः ग्रामीण: स्वस्य उद्याने बहूनि नारिकेलवृक्षान् रोपितवान् । यथा यथा कालः गच्छति स्म, तथैव वृक्षे बहूनि फलानि वहन्ति स्म । पूर्वं सः कथयति स्म यत् वृक्षात् उद्धृतं प्रथमं फलं गुरुवायुरप्पाय अर्पणं करिष्यामि इति । तस्य तीव्रभक्त्याः कारणात् अनेकानि फलानि प्राप्तानि आसन् ।

सः नारिकेलवृक्षात् उद्धृतानि प्रथमानि सर्वाणि फलानि शण स्यूते सङ्गृह्य गुरुवायूर मन्दिरं प्रति प्रस्थितवान् । मार्गे एकः चोरः ग्रामीणस्य मार्गं अवरुद्धवान् । 'स्यूते किमपि अस्ति सर्वं ददातु अन्यथा अहं तव प्राणान् गृह्णामि' इति तर्जितवान् । ग्रामीण: भयेन वेपमानः, 'तस्मिन् नारिकेले एव सन्ति, ते सर्वे गुरुवायूर कृष्णाय समर्पितानी' इत्युक्त्वा तस्मै चोराय दातुं अस्वीकृतवान् ।

ग्रामीणस्य वचनं उदासीनतया विचिन्त्य चोरः 'किं गुरुवायूर कृष्णस्य नारिकेलम् इति किमपि वस्तु अस्ति वा, तस्य शृङ्गं अङ्कुरितम् अस्ति वा' इति उपहासपूर्वकं हसति स्म ।

तदनन्तरं ग्रामीणस्य हस्तात् शण स्यूतं गृहीत्वा लुञ्चितवान् । स्यूते विद्यमानाः सर्वे नारिकेलाः विकीर्णाः अभवन्, चोरस्य आश्चर्यं यत् सर्वेषां नारिकेलानां शृङ्गाणि अङ्कुरितानि आसन् ।

चोरः पश्चातापं अनुभवन् गुरुवायूर कृष्णं प्रति क्षमायाचनं कृत्वा ग्रामीणं मन्दिरं गन्तुम् अनुमतिं अददात् । तदनन्तरं ग्रामीण: मन्दिरं गत्वा नारिकेलं अर्पयित्वा गुरुवायूर कृष्णाय धन्यवादं समर्पितवान् । अद्यत्वेऽपि तानि शृङ्गयुक्तानि नारिकेलानि गुरुवायूर-मन्दिरस्य अग्रमंडपे द्रष्टुं शक्यते ।

पादटिप्पणि

गुरुवायूर-मन्दिरम्

भारतस्य केरलराज्यस्य त्रिशूर-नगरे भगवान् गुरुवायूरप्प-मन्दिरं विद्यते । मन्दिरस्य मुख्यदेवता गुरुवायूरप्पन् । यद्यपि मंदिरे प्रतिष्ठित भगवन्तस्य विग्रहस्य रूपं विष्णो: चतुर्भुजरूपं, प्राय: भक्ता: तं ऊण्णिक्कणन् (बाल कृष्ण) रूपेण पूज्यन्ते ।

देव गुरुणा बृहस्पतिना वायु देवेन च एतत् नगरे विष्णु:, आनीतं प्रतिष्ठितं च । तस्मात् अस्य नगरं गुरुवायूर इति प्रसिद्धः अभवत् । अस्य मन्दिरस्य भूलोकवैकुण्ठम् अर्थात् पृथिव्यां विष्णो:पवित्रं निवासस्थानं इत्यपि प्रसिद्धम् अस्ति ।

தமிழமுது – தையல் சொல் கேளேல்

– **எம். ஸ்ரீதர்,** நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

ஒரே சொல்லுக்கு பல அர்த்தங்கள் கொண்ட பல சொற்கள் உலகத்தின் பற்பல மொழிகளில் வழக்கத்தில் உள்ளன. பாரினிலே மிக மூத்த மொழி அமிழ்தினும் இனிய தாம் எங்கள் தமிழ் மொழியிலோ அர்த்தங்கள் பற்பல உண்டு. தையல் என்பது அழகிய தோற்றமுடைய இளம் பெண்ணை குறிக்கிறது. இளமை என்பது இனிமையையும் வாழ்க்கையின் அனைத்து விதமான ரசங்களையும் உணர்ச்சிகளையும் கொண்டுள்ளது. **தையல் சொல் கேளாதே** எனும்போது ஒரு சிலர் பெண்களின் வார்த்தை என்று கருதக்கூடும். இன்னும் சிலர் இதனை அழகான பெண்களுடைய பேச்சைக் கேட்டு தவறான செயல்களை செய்யாதே என்ற கோணத்திலும் எடுத்துக் கொள்ளக் கூடும்.

ஒன்றிரு வார்த்தைகள் கொண்டு உலகத்தார் பயன்படும் மிகப்பெரிய கருத்தினையும் இனிமையாக எளிமையாக தெரிவித்திடும் வல்லமை கொண்டவர் சொல் மொழி வித்தகர் நமது பாட்டி ஔவையார். மனித வாழ்வில் ஆணுக்கும் பெண்ணுக்கும் சம உரிமை உண்டு என்பதை பல தருணங்களில் உணர்த்தி இருக்கிறார் நமது ஔவைப்பாட்டியார். உலகமும் உயிர்களும் என்றென்றும் நன்மையுடன் வாழ்வதில் அளவில்லா அக்கறை கொண்டு இருப்பவர் நமது ஔவையார். வையகம் வாழ்வாங்கு வாழ்ந்திட வழிமுறைகளை சொல்லித் தரும் நமது ஔவை **தையல் சொல் கேளேல்** என்று சொல்லும்போது அதற்கு வெளிப்படையான அர்த்தம் கொள்ளாமல் உள் அர்த்தத்தை நாம் உணர்ந்து கொள்ள வேண்டும்.

தையல் என்பதற்கு கொடுமை என்றொரு அர்த்தம் இருக்கிறது. கொடுஞ்சொற்களை கேட்க வேண்டாம் என ஔவையார் எடுத்துரைக்கிறார். கொடுஞ்சொற்களைக் கேட்பதால் கடும் சினம் உண்டாகிறது. கடும் சினத்தினால் இருவருக்கிடையே கைகலப்பு ஏற்பட்டு அது துன்பத்திற்கு வழி வகுக்கிறது. எனவே கொடுஞ்சொல்லை கேட்க வேண்டாம் என்று ஔவையார் எடுத்துறைக்கிறார். இனிய சொற்கள் இதயங்களை இணைத்திடும் அதே வேளையில், கொடுஞ்சொற்கள் கலகத்திற்கு வழிவகுத்திடும். கொடுஞ்சொற்களை கேட்டு வெகுண்டு எழுதல் கொலைக்கு கூட வழிவகுத்திடும். கொடுஞ்சொற்களை கூறுபவர் நமது முன்னின்று உரக்க கூறினாலும், அதனை ஒரு செவியில் ஏற்று மறு செவியில் விடுத்து விலகிச் செல்வோமானால் கலக்கமோ, கலகமோ ஏற்பட வாய்ப்பு இல்லை. ஒரு கை ஓசை தருவதில்லை, இரு கைகளும் ஒன்றோடு ஒன்று மோதும் போது ஓசை உருவாகிறது. இனிய சொற்களை முழு இதயத்தோடு ஏற்றுக் கொள்வோம். கொடுஞ்சொற்களை காதில் வாங்காமல் காற்றில் பறக்க விடுவோம். கொடுஞ்சொற்களை கேட்பதை தவிர்த்து இனிய சொற்களையும், இன்பம் தரும், நன்மை தரும் சொற்களையும் கேட்டு, நமது வாழ்க்கையை இனியதாக்குவோம். இன்புற வாழ்வோம். வாழ்க வையகம்.

தொடரும்...



அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருவேட்டக்குடி

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு



பானிலவும் பங்கயத்துப் பைங்கானல் வெண்குருகு
கானிலவு மலர்ப்பொய்கைக் கைதழ் சூழ் கழிக்கானல்
மானின்விழி மலைமகளோ டொருபாகம் பிரிவரியார்
தேனிலவு மலர்ச்சோலைத் திருவேட்டக் குடியாரே.

- ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் அருளிய 3-ஆம் திருமுறை

அம்பிகைக்கும், அர்ஜுனனுக்கும் அருள்புரிய அரனார் தேர்ந்தெடுத்த புன்னைமரங்கள் மிகுந்த புண்ணிய க்ஷேத்ரமே திருவேட்டக்குடி. அகிலலோக நாயகியே ஆனாலும் தவறேதும் செய்தால் அதற்கான தண்டனையை அனுபவித்தே ஆகவேண்டும் என்ற நியதிக்கு ஈசன் உயிர்கொடுத்த திருத்தலம் திருவேட்டக்குடி ஆகும். காவிரியாற்றின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள தேவார பாடல்பெற்ற தலங்களுள் திருவேட்டக்குடி 49ஆவது திவ்ய திருப்பதி ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

ஒருமுறை ஸ்ரீபார்வதிதேவியானவர் ஸ்ரீ சர்வேஷ்வரனிடம் உலகத்து உயிர்களுக்கெல்லாம் உயிராய் இருப்பவர் யார் ? எனக் கேட்டார்.

ஸ்ரீ ஜகதீஷ்வரனும், ''உமையே ! இதில் என்ன சந்தேகம் யாமே உலகத்து உயிர்கள் அனைத்துமாயத் திகழ்கின்றேன்'' என்றார்.

அன்னை பார்வதியோ சற்றே ஐயத்தோடு, அரனாரைப் பார்த்தார். ஸர்வலோக ரக்ஷகனான ஸ்ரீ சிவபெருமான் ஓரிரு விநாடிகள் தம் சுவாசத்தை நிறுத்த, உலகத்து உயிர்களனைத்தும் அசைவற்று நின்றன. உமாதேவியார் திகைத்தார், தவறுக்கு மன்னிப்பு கேட்டார்.

ஆயினும் உலகத்து உயிர்கள் அனைத்தும் ஓரிரு விநாடிகள் துன்புறக் காரணமாக இருந்தால், பார்வதிதேவியாரை மீனவர் குலத்தில் வளர்ந்து, பிறகு தவமியற்றித் தம்மை வந்து அடையுமாறு சபித்தார் சங்கரனார்.

மீனவராக வந்தார்... மீனின் கர்வம் தீர்த்தார்... :

அம்பிகையும் தற்போது ஆலயம் இருக்கும் பகுதியில் ஒரு புன்னைமர நிழலில் அழகிய பெண்குழந்தையாக வந்தார். அவ்வழியே வந்த மீனவத்தலைவன் அக்குழந்தையை எடுத்து அன்புடன் வளர்த்தான்.

வளர்ந்து சிறுமியானவுடன் முற்பிறவி நினைவு காரணமாக அப்பெண்குழந்தையானவள் ஈசன் நினைவாகவே எப்பொழுதும் சிவபூஜை செய்து சிவத்யானத்திலேயே இருந்து வந்தாள்.

சோமுகாசுரன் என்பவன் பிரம்மதேவரிடமிருந்து வேதங்களை பறித்துக் கொண்டுபோய் கடலில் மறைந்தான். உலக நலன் பொருட்டு ஸ்ரீமந்நாராயணன் மத்ஸ்யாவதாரம் மீனாக திரு அவதாரம் செய்து கடலுள் மறைந்திருந்த சோமுகாசுரனை அழித்து வேதங்களை

மீட்டு நான்முகனிடம் வழங்கினார்.

தமது அவதார நோக்கம் நிறைவேறிய பின்னரும் பெரிய மீன் உருவில் இருந்த ஸ்ரீமந்நாராயணன் கடலினைக் கலக்கி, அதனை கொந்தளிக்கச் செய்து எல்லோரையும் அச்சுறுத்தியது.

அரண்டுபோன தேவர்கள், ரிஷிகள், மனிதர்கள் என எல்லோரும் ஈசனைத் துதித்தனர். ஸ்ரீ சிவபெருமானும் மீனவ வடிவம்தாங்கி வந்து அந்த மீனின் கர்வம் போக்கினார். தன்னுனர்வு பெற்று ஸ்ரீமந்நாராயணன் வைகுண்டம் திரும்பினார்.

அத்துடன் மீனவக்குப்பத்தில் மீனவப் பெண்ணாக வளர்ந்து வந்த ஸ்ரீபார்வதி தேவியையும் மணந்து அம்மையப்பராகத் திருக்கயிலாயம் திரும்பினார் ஸ்ரீ சிவன்.

வேடராக வந்தார்... வேண்டும் வரம் தந்தார்... :

பாண்டவர்கள் வனவாச காலத்தில் ஸ்ரீ வியாஸபகவானின் அறிவுரைப்படி அர்ஜுனன் பாசுபத அஸ்த்ரம் பெற இப்பகுதியில் வந்து ஸ்ரீ சிவனாரை நோக்கி சிந்தனையை ஒருநிலைப்படுத்தி சீரிய தவம் செய்தான்.

அர்ஜுனன் தவத்தால் அகம் மகிழ்ந்த அரனாரும் அவன் முன்தோன்றினார், பாசுபத அஸ்த்ரம் வழங்கினார், அருளினார்.

வேடன் உருவில் வந்து அர்ஜுனனுக்குத் திருக்காட்சி தந்த காரணத்தால் இத்தலம் வேட்டக்குடி திருவேட்டக்குடி என்று அழைக்கப்பட்டது.

சிறப்புக்கள் :

1. இத் திருத்தலத்தில் உற்சவர் வேடமூர்த்தியாக கையில் வில் மற்றும் சூலம் ஏந்தியும், அம்பிகை வேடனது மனைவி போல் தலையில் பானையை வைத்தபடி வித்தியாசமாகக் காட்சி தருவது சிறப்பு.
2. ஸ்ரீ சிவபெருமான் வேடனாக இத்தலம் வந்தபோது ஸ்ரீ முருகப் பெருமானையும் உடன் அழைத்து வந்தார். இதனால் இங்கு ஸ்ரீ முருகனும் வில் ஏந்திய வேலவனாகத் திருக்காட்சி அருள்கிறார்.
3. மாசி விழாவில் மீனவ சமுதாய மக்கள் இறைவரைத் தங்கள் பகுதிக்கு அழைத்துவந்து அவரைத் தங்களது மாப்பிள்ளையாக மரியாதை செய்கின்றனர். இதனால் இறைவன் மாப்பிள்ளை சிவன் எனவும் அழைக்கப்படுகிறார்.
4. வேடர் வடிவில் இத்தலத்தில் இறைவன் எழுந்தருளிய காரணத்தால் இத்தலம் வேட்டக்குவடி எனப்பட்டது.
5. அம்பிகை சந்நிதி அருகிலேயே பள்ளியறை அமைந்துள்ளது.
6. மூலவர் சிவலிங்கமானது சதுரவடிவ ஆவுடையார் மீது ருத்ராக்ஷ பந்தலின் கீழ் அமைந்துள்ளது.
7. புன்னைவன நாதரின் சந்நிதிக்கு இடப்புறம் ஸ்ரீ சம்பந்தர் வலப்புறம் ஸ்ரீ சனீஷ்வரர் சந்நிதிகள் உள்ளன.
8. இறைவன் வேடர், மீனவர் என இருவடிவம் தாங்கி எழுந்தருளிய சிறப்பிற்கு உரியது இத்திருத்தலம்.
9. மாசிமக நன்னாளில் இறைவன் வேடமூர்த்தி வடிவில் கடலுக்கு எழுந்தருளி நீராடும் வைபவன் கடலாடு விழாவாகக் கொண்டாடப்படுகிறது.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	: ஸ்ரீ சுந்தரேஷ்வரர்
இறைவி	: ஸ்ரீ சௌந்தரநாயகி (எ) ஸ்ரீ சாந்தநாயகி
தீர்த்தம்	: தேவதீர்த்தம், அழகு தீர்த்தம்
தலமரம்	: புன்னை மரம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	: அம்பிகை, அர்ஜுனன் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

திருவேட்டக்குடி இறைவனை ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர் மற்றும் ஸ்ரீ நாவுக்கரசர் ஆகியோர் பதிகங்களால் பாடி மகிழ்ந்துள்ளனர். சேழக்கிழாரும் பெரியபுராணத்தில் இத்தலம் குறித்துச் சிறப்பாகப் பேசுகிறார்.

தரிசன காலம் : காலை 06.00 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை
மாலை 04.00 மணி - இரவு 08.30 மணி வரை

திருக்கோயில் முகவரி : ஸ்ரீ சுந்தரேஷ்வரர் திருக்கோயில்,
வேட்டக்குடி - 609 609. புதுச்சேரி.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண்கள் :
04368-265693 / 265691, 9894051753

அமைவிடம் :

திருவேட்டக்குட திவ்ய திருத்தலமானது பாண்டிச்சேரி மாநிலத்தில் காரைக்கால்-தரங்கம்பாடி சாலையில் காரைக்காலில் இருந்து சுமார் 8 கி.மீ. தொலைவில் வரிச்சக்குடி என்னும் ஊருக்கு அருகே அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ சௌந்தரநாயகி ஸமேத
ஸ்ரீ சுந்தரேஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

இணைந்திடுங்கள்...
இணைத்திடுங்கள்
இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- அல்லது ஆயுள் சந்தா (20 வருடம்) ₹1000/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1. Place of Publication	:	Salem - 636 001
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	D. Sivakumar
Nationality	:	Indian
Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4. Publisher's Name	:	M. Sridhar
Nationality	:	Indian
Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5. Editor's Name	:	M. Venkateswaran
Nationality	:	Indian
Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6. Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

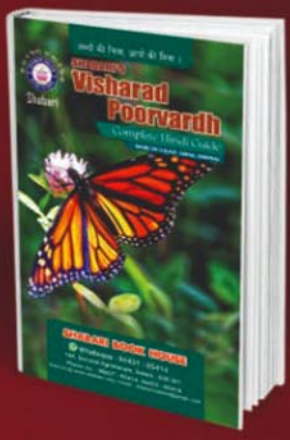
Sd.

Date : 05.05.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

VISHARAD POORVARDH

Just ₹330/- Only



Planned and perfect presentation.
Impressive and easy language.
Presents the Language in its own way.
Perfect companion for Students.
Prefer Shabari Guides.
Feel the difference.
Finest way to pass the exams with confidence.

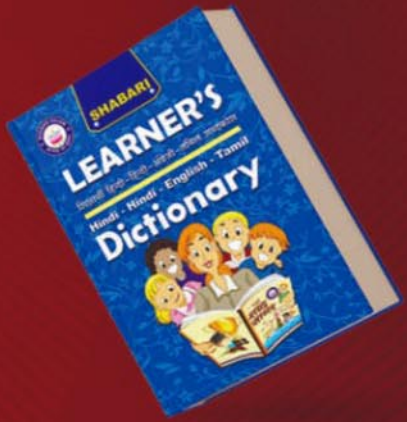
LEARNER'S DICTIONARY

1024 Pages

Just ₹420.00 Only

35,000 Words

Hindi - Hindi - English - Tamil



மூன்று மொழிகளின் முத்தான வார்த்தைகள்
முன்னேற்றம் தந்திடும் முத்தான வார்த்தைகள்
மூன்று மொழிகளில் புலமை வாய்ந்திட
முதல் வேலையாய் சபரியை வாங்கிடு
கற்போர்க்கு இது கலங்கரை விளக்கம்
கலைச்சொற்கள் மும்மொழியில் அடக்கம்
கற்போர்க்கு இது மிகவும் நன்று
கற்பிப்போர்க்கும் இதனால் பயன் உண்டு.
தமக்காக ஒன்று !
பிறர்க்கு பரிசளிக்க மிகவும் நன்று !!

Posted at Salem HPO 636 001. May - 2025

Published on 5th May - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

தயவுசெய்து அனைத்து பரிவர்த்தனைகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to

Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

உள்ளத்து உணர்வுகளைப் பிறரோடு பகிர்ந்துகொள்ள ...

சபரியின் கற்போம் கடிதம்

எல்லாச் சூழ்நிலைகளிலும் கடிதம் எழுதுவது எப்படி ...



Just
₹ 150.00
Only

SHABARI BOOK HOUSE
'Shabari Palace', 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
WhatsApp : 94431-65414
Landline Phone : 94433-65414, 98427-65414
email : gandhijiqa@gmail.com visit us @ www.shabari.org